

अमर शहीद जगदेव प्रसाद ने कहा था

“25 अगस्त, 1967 को पटना के अंजुमन इस्लामिया हॉल में ‘शोषित दल’ के गठन के बाद स्पष्ट शब्दों में उन्होंने कहा था कि भारत की सभी राजनीतिक पार्टियों पर ऊँची जाति का नेतृत्व है। दलित-पिछड़ों के तथाकथित नेता उन स्वर्ण प्रधान दलों में गुलामी का काम करते हैं, बनिहारी करते हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि गाँव का मजदूर एक सेर अनाज पर जमींदार की हरवाही करते हैं और दलित-पिछड़ों के नेता एक कार और एक बंगला पर पटना-दिल्ली में, ऊँची जाति की हरवाही करते हैं। दल के नीति-निर्धारण में उनकी कोई भूमिका नहीं होती। यही कारण है कि उन दलों से शोषितों का कभी कल्याण संभव नहीं होगा।”

## शोसद के स्थापना दिवस को समर्पित अंक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्रांति का अग्रदूत

# शोषित

साप्ताहिक

पटना कार्यालय का मो० नं०-9334016411  
Reg. 136/68-P.T.R.10/NP30/2023-25



शहीद जगदेव प्रसाद

प्रधान सम्पादक : रामानुज सिंह गौतम ● प्रबंध सम्पादक : अखिलेश कुमार ( मो०-9334016411 )  
सम्पादक मंडल : उपेन्द्र पथिक, संजय श्याम, सेनापति मेहता, संवैधानिक परामर्शदाता-अरुण कुशवाहा, अधिवक्ता, पटना उच्च न्यायालय एवं सुप्रीम कोर्ट, दिल्ली ( मो०-9905676251 )

वर्ष-58

अंक : 01-02

सितम्बर-अक्टूबर, 2026

मूल्य : 10 रुपये

वार्षिक : 200 रुपये

## आज जरूरी है कि हम बलिदानों का महत्व समझें, युवा पीढ़ी प्रेरणा ले और उनके सपनों का देश बनाए।

सितंबर का महीना हम शोषितों, मेहनतकशों के लिए क्रांति का महीना है। पहली सितंबर को ललई सिंह की जयंती है। ललई सिंह धुन के पक्के व्यक्ति थे। वे उत्तर भारत के एक महान सामाजिक न्याय कार्यकर्ता, क्रांतिकारी लेखक तथा नाटककार थे। उन्हें उत्तर प्रदेश में ब्राह्मणवाद, जातिवाद और अधविश्वास के खिलाफ वैचारिक क्रांति का प्रखर नायक माना जाता है। उन्होंने बहुजन चेतना और समाज सुधार के लिए कई नाटकों और पुस्तकों की रचना की। उनके नाटक हैं- शंबूक वध, अंगुलिमाल नाटक, एकलव्य, संत माया बलिदान और नाग यज्ञ। उनकी पुस्तक हैं- शोषितों पर धार्मिक डकैती, शोषितों पर राजनीतिक डकैती और सामाजिक विषमता कैसे समाप्त हो?

5 सितंबर को शोषित इंकलाब के लेनिन अमर शहीद जगदेव प्रसाद की शहादत तिथि है। जगदेव प्रसाद भारत के प्रमुख राजनीतिज्ञ, बिहार विधानसभा के सदस्य, मंडल कमीशन के प्रेरणा स्रोत तथा बिहार के उपमुख्यमंत्री रहे। वे एक कट्टर समाजवादी, अर्जक संस्कृति के प्रबल समर्थक तथा जाति प्रथा के घोर आलोचक थे। जगदेव बाबू ने तमाम घरेलू झंझावातों के बीच उच्च शिक्षा हासिल की। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से स्नातक तथा स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की। वहीं उनका परिचय चंद्रदेव प्रसाद वर्मा से हुआ और वर्मा जी ने जगदेव बाबू को विभिन्न विचारकों को पढ़ने, सुनने के लिए प्रेरित किया। फिर जगदेव बाबू ने सामाजिक राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया और राजनीति की तरफ प्रेरित हुए और सोशलिस्ट पार्टी से जुड़ गए। पार्टी के मुखपत्र ‘जनता’ का संपादन भी किया।

एक संजीवा पत्रकार की पिछड़ों शोषितों की समस्याओं के बारे में खूब लिखा तथा उनकी समाधान के बारे में अपनी कलम चलाई। 1955 में हैदराबाद जाकर इंग्लिश वीकली ‘सिटीजन’ तथा हिंदी साप्ताहिक ‘उदय’ का संपादन आरंभ किया। उनके क्रांतिकारी तथा ओजस्वी विचारों से पत्र-पत्रिकाओं का सरकुलेशन लाखों की संख्या में पहुंच गया। उन्हें धमकियों का भी सामना करना पड़ा। प्रकाशक से भी मनमुटाव हुआ लेकिन जगदेव बाबू ने अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। वह संपादक पद से इस्तीफा देकर पटना वापस लौट आए। सोशलिस्ट पार्टी से जुड़कर राजनीति करने लगे। पर यहां कमाये धोती वाला और खाए टोपी वाला की स्थिति देखकर संसोपा छोड़कर शोषित दल से गुजरते हुए शोषित समाज दल की स्थापना किया। इसी समय बिहार में कांग्रेस की तानाशाही सरकार के खिलाफ जेपी के नेतृत्व में विशाल छात्र आंदोलन शुरू हुआ। इस आंदोलन का नेतृत्व प्रभु वर्ग के अंग्रेजी दा लोगों के हाथ में था। इस आंदोलन के स्वरूप को जगदेव बाबू ने स्वीकृति नहीं दी। इससे दो कदम आगे बढ़कर इसे जन आंदोलन का रूप देने के लिए उन्होंने मई 1974 में सात सूत्री मांगों को लेकर पूरे बिहार में जनसभाएं की और सरकार पर दबाव डाल डाला। इसी क्रम में 5 सितंबर, 1974 को जगदेव बाबू हजारों की संख्या में शोषित समाज का नेतृत्व करते हुए आगे बढ़ने लगे। कुर्था में तैनात डीएसपी ने सत्याग्रहियों को रोका तो जगदेव बाबू ने इसका प्रतिवाद किया और विरोधियों के पूर्व नियोजित जाल में फंस गए। पुलिस ने उनके ऊपर गोली चला दी। गोली सीधे उनके गर्दन में जा लगी। वे गिर पड़े। सत्याग्रहियों ने उनका बचाव किया किंतु क्रूर पुलिस-प्रशासन घायल अवस्था में उन्हें पुलिस स्टेशन ले गई। पुलिस प्रशासन ने उनके मृत शरीर को गायब करना चाहा लेकिन भारी जन दबाव के चलते उनके शव को 6 सितंबर को पटना विधानसभा लाया गया। उनके शव यात्रा में देश के कोने-कोने से लाखों लाखों लोग पहुंचे। उनकी आवाज आज भी बहुजनों के दिलों दिमाग पर गूंजती है जिसमें वह कहते थे- आज का हिंदुस्तानी समाज साफ तौर से दो भागों में बंटा हुआ है-दस प्रतिशत शोषक और नब्बे प्रतिशत शोषित। यह इज्जत और रोटी की लड़ाई हिंदुस्तान में समाजवाद या कम्युनिज्म की असली लड़ाई है। भारत का असली वर्ग संघर्ष यही है।

17 सितंबर को पेरियार ३० वी० रामास्वामी का जन्मदिन है। पेरियार ने जाति, धर्म के आधार पर विद्यमान श्रेष्ठ हीनता को खत्म कर मानवता स्थापित करने की दिशा में अपना जीवन समर्पित कर दिया। पेरियार मूल रूप से सामाजिक क्रांतिकारी थे। वह एक बुद्धिवादी, अनिश्चरवादी एवं मानववादी थे। उनके चिंतन का मुख्य विषय समाज था। फिर भी उनके विचार और दृष्टिकोण राजनीति एवं आर्थिक क्षेत्र में (शेष पृष्ठ 3 पर)

## समतामूलक समाज की स्थापना ही अंतिम लक्ष्य-रामचन्द्र कटियार

पटना, 07 अगस्त। शोषित समाज दल ने अपना 54वां स्थापना दिवस जोश और संकल्प के साथ मनाया। प्रारंभ में दल का झंडोतोलन दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा० रामचन्द्र कटियार ने किया। कार्यकर्ताओं ने गगनभेदी नारों से झंडे का अभिवादन किया।

पटना के आईएमए हॉल में आयोजित समारोह का उद्घाटन दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा० रामचन्द्र कटियार ने किया, जबकि अध्यक्षता महामंत्री मा० अखिलेश कुमार ने की।

समारोह को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष मा० रामचन्द्र कटियार ने कहा कि शोषित समाज दल की स्थापना का यह 54वां साल है। जब 05 अगस्त, 1974 को अमर शहीद जगदेव प्रसाद और मानववादी चिंतक रामस्वरूप वर्मा ने दल की स्थापना की थी, उस वक्त सामंतवाद, जातिवाद और

नौजवान, महिलाएँ, आदिवासी, दलित-दमित और हाशिए पर रहने वाला हर वर्ग परेशान है और देश का हुक्मरान महंगे सूट पहनकर तथा शानो-शौकत के साथ विदेश भ्रमण में मशगूल है। ऐसी स्थिति में हम सबों को स्थापना दिवस के अवसर पर संकल्प लेने का समय है कि किसी भी हाल में देश को न टूटने देंगे और न बिकने देंगे। मानववादी समाज की स्थापना के लिए हमें अपनी कमर और कस लेनी होगी।

अध्यक्षीय भाषण करते हुए दल के महामंत्री अखिलेश कुमार ने कार्यकर्ताओं को दल के प्रति निष्ठावान रहते हुए जगदेव प्रसाद और रामस्वरूप वर्मा के बताए रास्ते पर चलने का आह्वान किया और वीर की तरह जीने और शहीद की तरह मरने का एलान किया। साथ ही जगदेव प्रसाद को भारत रत्न



पूँजीवाद चरम पर था। उन्होंने समाज के दुश्मनों से जमकर मुकाबला किया। जनता को राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से जागृत किया और जन मुद्दों पर संघर्षरत रहते हुए अपनी शहादत भी दी। आज भी समाज के ये कोढ़ विद्यमान हैं, जिनसे लड़कर समतामूलक समाज की स्थापना ही हमारा अंतिम लक्ष्य है।

स्वागत भाषण करते हुए दल के बिहार राज्य संयुक्त मंत्री धर्मेन्द्र कुमार ने तमाम कार्यकर्ताओं को जगदेव बाबू द्वारा दिए गए टास्क को पूरा करने के लिए संघर्ष पथ पर डटे रहने के लिए अभिनंदन किया और शोषित समाज दल के सिद्धांत-शोषितों का राज, शोषितों के लिए, शोषितों के द्वारा-पर अमल करने का संकल्प व्यक्त किया।

मुख्य अतिथि भारतीय मोमिन फ्रंट के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० महबूब आलम अंसारी ने विस्तार से देश के हालात पर जोर डाला और कहा कि आज देश राजनीतिक विकलांगता का शिकार हो चुका है। शासक वर्ग की पार्टियों द्वारा देश को जाति, धर्म, संप्रदाय में बांटने की कोशिशें जारी हैं। किसान, छात्र,

दोने, इंसानी बस्ती बसाकर हर परिवार को रोजगार देने, अंबेडकर साहित्य को हरेक पुस्तकालय में उपलब्ध कराने, किसानों को उचित सब्सिडी देकर खेती-किसानी को रोजगार का माध्यम बनाने का प्रस्ताव दिया, जिसे सदन ने ताली बजाकर पास किया।

समारोह को संबोधित करने वालों में प्रमुख थे- रामचन्द्र मेहता, मथुरा प्र० अकेला, दीपक पासवान, अरुण कुमार गुप्ता, मंजर आलम, वसंत वर्मा, लालमोहन राम, कृष्णा प्र० दिवाकर, अमरजीत कुशवाहा, भोला प्र० देहाती, दिलीप मेहता, राम प्रसाद गुप्ता।

स्थापना दिवस समारोह के बाद बिहार राज्य शोषित समाज दल का 27वां सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए- अध्यक्ष-सुजयान पासवान, उपाध्यक्ष-कृष्णा प्र० दिवाकर, लालमोहन राम, राज्यमंत्री-मंजर आलम, मीडिया प्रभारी सह अंकेक्षक-सौरभ कुमार बंटी, संयुक्त मंत्री-श्वेता वर्मा, ओम प्रकाश, कोषाध्यक्ष-मो० असरफ, सदस्य- अमरजीत कुशवाहा, रानी देवी, महेश सिंह, बलिराम पंडित, रामनाथ सिंह, लालचन्द राजवंशी। ■

हाल-फिलहाल

## जमुई कांड मोरल पुलिसिंग का भयानक परिणाम है

19 सितम्बर को बिहार के जमुई में एक घटना घटित हुई जिसने सोशल मीडिया पर भूचाल ला दिया। यह घटना थी दसवीं में पढ़ने वाली एक छात्रा के साथ यौन उत्पीड़न की। सोशल मीडिया पर खबर फैलने के बाद अभियुक्तों की गिरफ्तारी की कोशिशें तेज़ की जाती हैं और मुख्य अभियुक्त को पैर में गोली मारकर गिरफ्तार कर लिया जाता है। ठीक उत्तर प्रदेश की पुलिस की तरह।

दरअसल 19 सितंबर को एक छात्रा अपने सहपाठी के साथ बाइक पर कोचिंग से लौट रही थी। रास्ते में वे एक जगह फोटो खींचने के लिए रुकते हैं। उसी समय कुछ गुंडे उनको घेर लेते हैं और उनसे पूछताछ के नाम पर बदतमीजी करने लगते हैं। छात्रा का सहपाठी उसको गुंडों से बचाने की कोशिश करता है। लेकिन बदतमीजी बढ़ते-बढ़ते छात्रा के यौन उत्पीड़न तक जा पहुंचती है। ऐसी घटना मार्च 2026 में ही नालंदा में घटित हो चुकी है।

इस घटना ने सोशल मीडिया पर भूचाल तो ला ही दिया साथ ही कई तरह के सवालों को जन्म भी दे दिया। लोग तरह-तरह से घटना की व्याख्या करते हुए दोषियों पर सख्त कार्यवाही की मांग करने लगे। घटना पर सबसे खराब टिप्पणी जद यू के प्रदेश अध्यक्ष ने की। उन्होंने इसे छिटपुट घटना बताया। वहीं जमुई की विधायक और मंत्री श्रेयशी ने कहा कि मोरल पुलिसिंग सभ्य व शालीन तरीके से भी की जा सकती है। यानी वे इस बात को स्वीकार करती हैं कि अगर कोई महिला या लड़की अपने पुरुष मित्र के साथ जा रही है तो उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। उसके साथ पूछताछ जायज है।

घटना के बाद मोदी, सम्राट चौधरी और नयी-नयी विधायक बनी मिथिला के विडिओ भी वायरल हो रहे हैं जिसमें वे बिहार में महिला सुरक्षा को लेकर बड़े-बड़े दावे कर रहे हैं। दरअसल इस घटना ने उनके इन दावों की हवा निकालकर असली तस्वीर सामने ला दी।

पुलिस ने जमुई कांड के आरोपियों को पकड़ने की कोशिशें उस समय शुरू की जब यह विडिओ सोशल मीडिया पर वायरल हुई

साथ ही उसने उन लोगों पर भी कार्यवाही की है जिन्होंने इस विडिओ को सोशल मीडिया पर डाला। सरकार और पुलिस प्रशासन का ऐसा करने का मकसद लोगों को डराना है ताकि ऐसी घटनाओं पर उनकी किरकिरी न हो।

दरअसल यह घटना भारतीय समाज में महिलाओं के साथ बढ़ रही यौन उत्पीड़न की घटना को तो दिखाती ही है साथ ही यह लम्बे समय से समाज में बढ़ रही मोरल पुलिसिंग को भी दिखाती है। जैसे 14 फरवरी (वेलेंटाइन डे) पर बजरंग दल के लोगों द्वारा पार्कों में बैठे पुरुष व महिला मित्रों का उत्पीड़न। यह मोरल पुलिसिंग महिलाओं के मामले में तो तुरंत ही नज़र में आ जाती है लेकिन और भी कई तरह की मोरल पुलिसिंग समाज में मौजूद है जिसको संज्ञान में लेना जरूरी है।

जब से हिंदू फासीवादी सत्ता में आये हैं तबसे खाने के मामले में भी मोरल पुलिसिंग की घटनायें समाज में बढ़ी हैं। किसी के घर में क्या बना है या कोई क्या खाने का सामान लेकर जा रहा है, या किसी खास समय पर क्या नहीं खाया जायेगा इसकी निगरानी समाज में हो रही है। खाने के मामले में मोरल पुलिसिंग करने वाले मारपीट करने के साथ लोगों की जान भी ले लेते हैं।

हिंदू फासीवादियों ने समान नागरिक संहिता के रूप में ऐसा ही कानून बनाया है जो समाज में मोरल पुलिसिंग को बढ़ाकर पुलिस प्रशासन को भी इसमें शामिल कर लेता है और समाज में महिलाओं के अधिकारों पर चोट करता है।

दरअसल मोरल पुलिसिंग सविधान के नियमों से अलग हटकर शासन कर रहे फासीवादियों की सोच का परिणाम है। नैतिकता कायम करने के नाम पर यह समाज में एक लम्पट गिरोह को पैदा करते हैं जो खुद किसी नैतिकता को नहीं मानता। यह समाज में मौजूद पुरानी सोच और पूर्वाग्रहों का फायदा उठाते हैं और समाज में आतंक का राज कायम करते हैं। लोगों के निजी जीवन में हस्तक्षेप कर वह उन्हें अपने अनुसार चलने को बाध्य करते हैं। अतः हर तरह की मोरल पुलिसिंग का विरोध किया जाना जरूरी है। ■

## गरीबी और निरादर के खिलाफ संघर्ष जारी रहेगा-अखिलेश कुमार

**रफीगंज, 10 अगस्त।** शोषित समाज दल की औरंगाबाद शाखा की एक अहम बैठक ग्राम-करमा मसूद के ललिता कुंज में आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता शोषित समाज दल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मथुरा प्र० अकेला ने किया तथा संचालन सौरभ कुमार बंटी ने किया।

बैठक के मुख्य अतिथि अखिलेश कुमार, महामंत्री, शोसद ने विस्तार से दल के नीति, सिद्धांत तथा कार्यक्रम को बताया और दल के संस्थापक अमर शहीद जगदेव प्रसाद की कुर्बानी को याद करते हुए मजदूरों, किसानों, छात्र-नौजवानों को शासन की दमनकारी नीतियों के खिलाफ प्रतिरोध की संस्कृति को जिन्दा रखने की अपील किया और समानता पर आधारित व्यवस्था निर्माण के अंतिम लक्ष्य तक लड़ाई जारी रखने का आह्वान किया।

स्वागत भाषण करते हुए बैठक के आयोजक शोषित पत्रिका के संपादक संजय श्याम ने

पूरे मुल्क में छात्र-नौजवानों के आंदोलन को केन्द्रित किया और शोषित समाज दल के हर कार्यकर्ता को आत्मबलिदानी जज्बा के साथ आंदोलन का हिस्सा बनने की अपील किया।

शोसद के बिहार राज्य अध्यक्ष सुरजभान ने दल को मजबूत बनाने के लिए लोगों को राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक रूप से जागृत करने और दल के अंतिम तक्ष्य शोषितों का राज, शोषितों के लिए तथा शोषितों के द्वारा को जन-जन में पहुंचाने की अपील किया।

अन्य वक्ताओं में शोसद के संयुक्त मंत्री रामचन्द्र मेहता, अर्जक संघ के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष शिवनंदन प्रभाकर, रामप्रसाद सिंह, संयुक्त मंत्री श्वेता वर्मा, गणेश कुमार, बलिराम मेहता, युगेश पासवान, तारकेश्वर पासवान, अशोक वर्मा, रौशन पासवान, अंबेदकर कुमार प्रमुख थे।

बैठक के अंत में औरंगाबाद जिला इकाई गठित की गई जिसमें रौशन पासवान जिला मंत्री, धीरज कुमार कोषाध्यक्ष निर्वाचित

## चुनाव आयोग... लागा चुनरी में दाग

सौरभ द्विवेदी ने इंडियन एक्सप्रेस अखबार को एक नये तेवर के साथ दिल दहलाने वाली साजिशों का खुलासा कर दिया, उससे दो काम हो गया। एक तो सौरभ द्विवेदी का सितारा अचानक डूब से आसमान की ओर पहुंचने लगा, ओर दूसरा यह कि इंडियन एक्सप्रेस भी उरूज में आता दिख रहा है। फिलहाल यह खबर पढ़ें, जो केंद्रीय चुनाव आयोग में चल रही बेलगाम साजिशों का खुलासा है। कहने की जरूरत नहीं कि ज्ञानेश की इतनी औकात नहीं हो सकती है कि वह अपने अधीनस्थ लेकिन समकक्ष अधिकार प्राप्त आयुक्तों को इतनी बदतमीजी के साथ इग्नोर कर सकें। जाहिर है कि इसमें मोदी सरकार का साफ आदेश है, गुप्त ही सही। और न्यायालय को भी खामोश रहने का संकेत जरूर होगा।:-

केंद्रीय चुनाव आयोग में अंदरूनी रार: दो आयुक्तों की 14 आपत्तियां और SIR विवाद चुनाव आयोग के अंदर क्या हुआ? किन मुद्दों पर जताई गई आपत्तियां? फॉर्म-6 में बदलाव को अवैध बताया गया डेटाबेस केंद्रीकरण और आईटी सिस्टम पर सवाल

आयोग की सफाई और राजनीतिक बवाल द इंडियन एक्सप्रेस की 23 सितंबर 2026 की जांच रिपोर्ट ने चुनाव आयोग के अंदर गहरी दरार का खुलासा किया है। रिपोर्ट के अनुसार चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने पिछले 10 महीनों में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के नेतृत्व में लिए गए फैसलों पर रिकॉर्ड में 14 बार आपत्ति दर्ज कराई। ये आपत्तियां विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) प्रक्रिया, नए मतदाताओं के पंजीकरण और मतदाता सूची के प्रबंधन से जुड़ी हैं। रिपोर्ट के बाद विपक्ष ने तीखा हमला बोला है, जबकि आयोग का कहना है कि सभी फैसले सर्वसम्मति से लिए गए।

तीन सदस्यीय चुनाव आयोग में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के अलावा सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी शामिल हैं। इंडियन एक्सप्रेस की पड़ताल के मुताबिक नवंबर 2025 से अगस्त 2026 के बीच दोनों आयुक्तों ने लिखित रूप से कम से कम 14 बार आपत्ति दर्ज की। इनमें से चार आपत्तियां एक ही दिन में दर्ज हुईं। उनका आरोप है कि कई आदेश और फैसले उनकी जानकारी या सहमति के बिना आयोग के नाम पर जारी किए गए। ये आपत्तियां मुख्य चुनाव आयुक्त को भी भेजी गईं। 9 सितंबर को चार महीने बाद तीनों आयुक्तों की पूरी बैठक हुई। दोनों आयुक्तों ने जुलाई में कैबिनेट सचिव टी०वी० सोमनाथन को भी पत्र लिखकर आईटी विभाग के कामकाज में बदलाव की शिकायत की। आपत्तियां मुख्य रूप से चार क्षेत्रों से जुड़ी हैं। पहला, नए मतदाताओं का पंजीकरण और फॉर्म-6 में बदलाव। दूसरा, मतदाता सूची से नाम हटाना, जोड़ना और बहाल करना। तीसरा, पश्चिम बंगाल में SIR के दौरान दाखिल की गई अपीलें। चौथा, मतदाता डेटाबेस और

सॉफ्टवेयर पर नियंत्रण। रिपोर्ट में कहा गया है कि SIR प्रक्रिया के दौरान 30 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की ड्राफ्ट मतदाता सूची से 13 करोड़ से अधिक नाम हटाए गए। गोवा में सॉफ्टवेयर की वजह से 97 पात्र मतदाताओं का नाम नहीं जुड़ सका, जबकि सुप्रीम कोर्ट का आदेश था। पश्चिम बंगाल में 16.10 लाख अपीलों को लेकर संधू ने पूछा कि ये अपीलों आयोग की ओर से कौन और किसके आदेश पर दाखिल कर रहा है।

सबसे बड़ा विवाद फॉर्म-6 को लेकर है, जिससे नए मतदाता पंजीकरण कराते हैं। मई 2026 में विवेक जोशी ने फाइल पर लिखा कि फॉर्म-6 वैधानिक फॉर्म है और इसे बदलने के लिए सरकार को नियम संशोधित करने होंगे। सुखबीर सिंह संधू ने भी सहमति जताई। इसके बावजूद पोर्टल पर बदलाव कर दिया गया, जिसमें नए मतदाताओं से पूछा जाने लगा कि वे या उनके माता-पिताध दादा-दादी पिछली SIR सूची में हैं या नहीं। 13 अगस्त को संधू ने इसे “अनधिकृत और अवैध” बताते हुए तुरंत हटाने की मांग की। उन्होंने लिखा कि इससे युवा और पहली बार वोट देने वाले मतदाताओं को परेशानी हो रही है। रिपोर्ट के अनुसार यह बदलाव अब तक नहीं हटाया गया।

दोनों आयुक्तों ने चेतावनी दी कि मतदाता सूची का डेटाबेस धीरे-धीरे दिल्ली में केंद्रित किया जा रहा है। ईसीआईनेट और ईआरओनेट सिस्टम पर जमीनी स्तर के अधिकारियों (ईआरओ, डीईओ, सीईओ) की पहुंच सीमित कर दी गई। विवेक जोशी ने मई में आईआईटी विशेषज्ञों से ऑडिट कराने का प्रस्ताव दिया ताकि यह सुनिश्चित हो कि केवल वैधानिक अधिकारी ही डेटाबेस में बदलाव कर सकें। जुलाई में आईटी विभाग की निगरानी का काम एक अधिकारी से हटाए जाने पर दोनों आयुक्तों ने कैबिनेट सचिव को पत्र लिखा और आदेश को रद्द कर दिया। संधू का कहना था कि राज्य स्तर के अधिकारियों के पास पूरा एक्सेस नहीं है और आईटी प्रमुख को इसे रोकने का कानूनी अधिकार नहीं है।

चुनाव आयोग के सूत्रों ने रिपोर्ट का खंडन करते हुए कहा कि दोनों आयुक्तों ने कुछ व्यावहारिक सुझाव और टिप्पणियां दी थीं, लेकिन अंतिम फैसले तीनों सदस्यों की सर्वसम्मति और हस्ताक्षर से लिए गए। आयोग का दावा है कि व्यक्तिगत राय को संस्थागत असहमति नहीं माना जा सकता। दूसरी ओर विपक्ष ने तीखा हमला बोला। कांग्रेस ने कहा कि तीन सदस्यीय आयोग में सिर्फ ज्ञानेश कुमार की चल रही है। मनीष तिवारी ने “अदृश्य हाथ” का आरोप लगाया। टीएमसी, समाजवादी पार्टी, सीपीआई (एम) और शिवसेना (यूबीटी) ने ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे या महाभियोग की मांग की। कुछ नेताओं ने सुप्रीम कोर्ट से स्वतः संज्ञान लेने की अपील की। मामला अभी भी गर्मीया हुआ है और आगे की कानूनी-राजनीतिक कार्रवाई पर नजर है। ■

हुए। साथ ही ग्यारह सदस्यीय समिति का गठन हुआ जिसके सदस्य अशोक वर्मा, सीताराम पासवान, रामाधार मेहता, तारकेश्वर

पासवान, सौरभ बंटी, युगेश पासवान, कमलेश मेहता, नागेश्वर सिंह, बबलू चौधरी, छोटू कुमार, गणेश कुशवाहा निर्वाचित हुए। ■

# मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार अविलंब इस्तीफा दे – रामचन्द्र कटियार

**पटना, 30 सितंबर।** शोषित समाज दल ने दल के संस्थापक, बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री शोषित इंकलाब के लेनिन अमर शहीद जगदेव प्रसाद के 52वें शहादत दिवस समापन माह पर राज्यपाल, बिहार के समक्ष एक दिवसीय धरना दिया। धरना की अध्यक्षता शोसद के महामंत्री मा० अखिलेश कुमार ने तथा संचालन युवा साथी अमरजीत कुशवाहा ने किया। धरना में शामिल तमाम सदस्यों का स्वागत दल के बिहार प्रदेश अध्यक्ष मा सुरजभान ने किया।

अपने उद्बोधन में महामंत्री मा० अखिलेश कुमार ने अपनी 15 सूत्री मांगों का समर्थन किया और कहा कि देश के सभी लड़के-लड़कियों को मुफ्त, अनिवार्य, मानववादी तथा सम शिक्षा लागू करना, किसानों के सभी कर्जे माफ करना, खेत मजदूरी अधिनियम लागू करना समय की मांग है। शोषित समाज दल पूरे दम-खम के साथ इन मांगों को लेकर आन्दोलन करेगा।

उद्घाटन भाषण करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष मा० रामचन्द्र कटियार ने अमर शहीद जगदेव प्रसाद की शहादत के कारणों को बताया और कहा कि आज भी उनकी लड़ाई जिन्दा है और मांग माने जाने तक संघर्ष जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि अमर शहीद जगदेव प्रसाद ने पूरे बिहार का दौरा कर काफी नजदीक से मजदूरों-मजलूमों-किसानों की समस्याओं को देखा और भुता तथा सरकार को उनके निदान की दिशा में बढ़ने को मजबूर किया। बहुजनों के जन उभार से घबराकर तत्कालीन कांग्रेसी हुकूमत ने उनकी हत्या कर दिया। वे जीवनपर्यंत सच्चे लोकतंत्र की स्थापना हेतु लगे रहे। वर्तमान समय में देश का हर वर्ग उत्तेजित और आंदोलित है। भाजपा प्रतिरोध की हर आवाज को दबाना चाहती है। एसआइआर के माध्यम से चुनाव में व्यापक धांधली कर जनता की आवाज को दबाना



चाहती है जिसका हम भरपूर विरोध करते हैं। एसआइआर के नाम पर वोट चोरी का प्रमाण हमारे सामने है। भाजपा को सत्ता में लाने के लिए मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने दोनों चुनाव आयुक्तों को अपने 14 फैसले से अलग रखा। SIR के नाम पर बिहार में 63 लाख तथा बंगाल में 91 लाख मतदाताओं के नाम काटे गये। हम चुनाव में की गई व्यापक गड़बड़ी के लिए मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के अविलंब इस्तीफे की मांग करते हैं। शोषित समाज दल निरादर और दरिद्रता का एक साथ नाश करनेवाली ‘इंसानी बस्ती बसाओ योजना’ को लागू करने का वादा करता है जिसमें देश के समस्त नौकरी विहीन, एक एकड़ से कम या भूमिहीन सारे दलित, प्रजाजनों और गिरिजनों को सरकारी खर्चे पर इंसानी बस्तियां बनाकर बसायेगा जिसमें प्रति परिवार एक पक्का कमरा, रसोई, स्नानागार व घर घेरे की जमीन तथा बाग लगाने हेतु दो एकड़ जमीन उपलब्ध करायेगा। 12 करोड़ एकड़ बेकार पड़ी वन भूमि में से प्रति परिवार 2 एकड़ भूमि तथा उन्हें 20 हॉर्स पावर तक का कारखाना चलाने की ट्रेनिंग, कच्चा माल देकर पक्का माल खरीदने की गारंटी देकर उन्हें स्वावलंबी व स्वाभिमानी

बनायेगा। शोषित समाज दल के राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री रामचन्द्र मेहता ने देश की वर्तमान स्थिति की चर्चा किया और जनविरोधी तमाम नीतियों के खिलाफ जोरदार आन्दोलन का ऐलान किया। उन्होंने देश की जनता से अपील किया कि वे देश की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार सांप्रदायिक, जातिवादी और पूंजीवादी शक्तियों से संचालित सारे सिद्धांतहीन दलों को त्यागकर शोषित समाज दल को अपनायें और तन-मन-धन से सहयोग करें ताकि बाबा साहेब अम्बेदकर, महामना रामस्वरूप वर्मा और अमर शहीद जगदेव प्रसाद का सपना शीघ्र पूरा किया जा सके।

मुख्य अतिथि अखिल भारतीय मोमिन फ्रंट के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० महबूब आलम अंसारी ने कहा कि भाजपा के शासनकाल में देश की स्थिति बहुत भयावह हुई है। जनता से जो वादे किये गये थे और जो सपने दिखाए गये थे वे सब चकनाचूर हो गये हैं। किसान दुर्दशाग्रस्त होकर आत्महत्याएं कर रहे हैं, नौजवान बेकार और तनावग्रस्त हैं। महंगाई तथा भ्रष्टाचार चरम पर है। पड़ोसी देशों से संबंध खराब हो गये हैं। विदेश नीति पूरी तरह से फेल हैं। ऐसी स्थिति में उन्होंने अमर

शहीद जगदेव प्रसाद के संघर्ष को याद किया और वर्तमान फासीवादी सरकार के खिलाफ हर प्रगतिशील, लोकतांत्रिक तबके को उठ खड़े होने का आह्वान किया।

समापन भाषण करते हुए दल के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष रामानुज सिंह ने सरकार की नाकामियों का जिक्र किया और शहीद जगदेव प्रसाद की शहादत से सबक लेते हुए तमाम मेहनतकशों को जन-ज्वार पैदा करने की अपील किया। उन्होंने बताया कि देश के सारे दिल सिद्धांतविहीन हैं। वे जनतंत्र विरोधी संप्रदायवाद, जातिवाद और पूंजीवाद के सहारे सत्ता पर काबिज हो रहे हैं। इनसे किसी समस्या का समाधान होने की उम्मीद नहीं है बल्कि जनतंत्र को खतरा है। इसलिए हमें शोषित समाज दल के झंडे को नीचे आकर समता पर आधारित नया जनतंत्र लाना है।

अमर शहीद जगदेव प्रसाद को भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित करने, डॉक्टर अंबेदकर के साहित्य को सभी शिक्षण संस्थानों में उपलब्ध कराने, पुनपुन परियोजना लागू करने, उत्तरी कोयल नहर को अविलंब चालू करने, लघु व कुटीर उद्योगों का विस्तार करने, सामाजिक व शैक्षिक आधार पर जनसंख्या के अनुपात में आरक्षण देने जैसे मुख्य मांगों समेत पंद्रह सूत्री मांगों के समर्थन में पूनम देवी, रामचन्द्र मेहता, नवल किशोर कुशवाहा, मो० मंजर आलम, प्रशांत कुशवाहा, भोला देहाती, सेनापति मेहता, शिशुपाल कुमार, महेश सिंह, कुलदीप मेहता, मथुरा प्रसाद अकेला, अधिवक्ता रवीन्द्र सिंह, राम प्रसाद कुशवाहा, अंबेदकर कुमार आदि ने धरना को संबोधित किया।

धरना में गायन टीम के साथ श्वेता वर्मा, कवि रामाधार जी और सौरभ कुमार बंटी ने ताल-मेल बनाकर शानदार गीतों की प्रस्तुति दी। ■

## ( सम्पादकीय का शेष )

परिलक्षित होते हैं।उनका अटूट विश्वास था कि सामाजिक मुक्ति ही राजनीतिक एवं आर्थिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करेगी।

28 सितंबर शहीद-ए-आजम भगत सिंह का जन्मदिन है। बचपन से ही उनके मन में देश के प्रति देशभक्ति और प्रेम की गहरी भावना थी। जलियांवाला बाग हत्याकांड ने उनके जीवन को पूरी तरह बदल दिया और उन्होंने अंग्रेजी दास्तां से देश को आजाद करने का संकल्प लिया। देश के युवाओं को एकजुट करने के लिए 1926 में उन्होंने नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी। देश की बहरी ब्रिटिश सरकार को अपनी आवाज सुनने के लिए उन्होंने 8 अप्रैल, 1929 को बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर सेंट्रल लेजिसलेटिव असेंबली ( दिल्ली विधानसभा) में बम फेंका। बम धमाके के बाद भागने से मना किया और अपनी गिरफ्तारी दी। जेल में रहने के दौरान उन्होंने भारतीय राजनीतिक कैदियों के साथ हो रहे अमानवीय व्यवहार के खिलाफ लंबी भूख हड़ताल की। भगत सिंह एक महान क्रांतिकारी होने के साथ एक प्रखर लेखक और विचारक थे। विभिन्न विषयों पर उनके द्वारा लिखे गए लेख उनके गहरे और तार्किक विचारों को दर्शाते हैं। उनका प्रसिद्ध लेख ‘मैं नास्तिक क्यों हूँ’ उनके अकाट्य तर्क को चिन्हित करता है। उन्हें और उनके साथियों ( राजगुरु और सुखदेव) को सांडर्स हत्या के मामले में मौत की सजा सुनाई गई। साम्राज्यवाद के खिलाफ हंसते-हंसते फांसी के फंदे को गले

लगाने वाले इन तीनों वीरों को 23 मार्च, 1931 को शाम के समय फांसी दी गई। उनका यह अमर नारा- इंकलाब जिंदाबाद- आज भी देश के युवाओं में देशभक्ति की ऊर्जा भर देता है।

शोषित साप्ताहिक का सितंबर अंक इन नायकों को समर्पित है। आज भी शोषित-पीड़ित, हाशिए पर जीवन यापन कर रहे बहुजनों, मजदूर-किसानों, मेहनतकशों के सामने रोटी और इज्जत की लड़ाई सामने है। इस पूंजीवादी लोकतंत्र में हर तबका तबाह है, परेशान है। अर्थव्यवस्था की हालत बुरी है, किसान-मजदूर-नौजवान- महिलाएं सभी लाचारी, बेबसी, बेरोजगारी, भूखमरी, इस व्यवस्था की नाकामी से हलकान हैं। आम लोगों में दहशत है, अविश्वास है। लूट, छूट, भोग और शोषण पर टिकी यह व्यवस्था साम्राज्यवादियों, पूंजीपतियों और कॉरपोरेटों के सामने नतमस्तक है। शासक वर्ग देश को लाठी-गोली से चलाना चाहता है।

ऐसी विषम परिस्थिति में इन महानायकों के विचारों को पढ़ने की जरूरत है और उनके बताए रास्ते पर चलकर शोषितों का राज, शोषितों के लिए और शोषितों के द्वारा को अमल में ले जाने की जरूरत है। क्रांतिकारी राजनीति की अलख जगाने के लिए कुछ इस तरह सोचने की जरूरत है- **साम्राज्यवादी डाकुओं की बढ़ती लूट देसी सरमायेदारों की फूलती थैलियां मेहनतकशों की बढ़ती तबाही बेरोजगारी, आसमान छूती महंगाई छंटनी-तालाबंदी, तबाही-बर्बादी**

## शोषित समाज दल ने चलाया तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर

**पटना।** शोषित समाज दल ने केन्द्रीय कार्यालय, पुरानी जक्कनपुर, पटना में अपने कार्यकर्ताओं को राजनैतिक रूप से प्रशिक्षित करने के लिए दिनांक 30 सितंबर से 02 अक्टूबर, 2026 तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर चलाया। प्रथम दिन (30 सितंबर) की रात्रि 7.30 बजे से प्रशिक्षण शुरू हुआ। उपस्थित सदस्यों के परिचय से इसकी शुरुआत हुई। दल के महामंत्री ने दल के सदस्यों को बताया कि प्रशिक्षण की आवश्यकता क्यों है और प्रशिक्षण में हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना है। फिर दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामचन्द्र कटियार ने देश-दुनिया की स्थिति पर अपनी बातों को केन्द्रित करते हुए बताया कि हमें हर परिस्थिति, समय और अपनी भूमिका का आकलन करते रहना चाहिए। प्रथम दिन का यह सत्र ढाई घंटे का चला।

दूसरे दिन (01 अक्टूबर) को झंडोतोलन के बाद प्रथम सत्र की शुरुआत हुई। जुड़नेवाले कई नये सदस्यों को प्रशिक्षण के उद्देश्य की जानकारी दी गई। तत्पश्चात राष्ट्रीय अध्यक्ष रामचन्द्र कटियार ने दल के सिद्धांत, विधान और कार्यक्रम को बिन्दुवार बताया। कई सदस्यों के कुछ सवाल आए जिसका जबाव रामचन्द्र कटियार ने दिया। प्रशिक्षण में दल से संबंधित शिकायत व सुझाव पर खुलकर बोलने की आजादी थी।

**काले कानून, लाठी गोली का प्रजातंत्र बिकता न्याय अराजकता, लूटपाट, गुंडागर्दी, दलाली-कमीशन खोरी, भ्रष्टाचार**

भोजनोपरांत द्वितीय सत्र की शुरुआत हुई। दल के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष रामानुज सिंह ने दल के सदस्य किन्हें और कैसे बनाना है, इस पर अपनी बातों को सटीक तौर पर रखा। फिर शोषित पत्रिका के संपादक संजय श्याम ने जनपक्षीय लेखन पर अपनी बातों को रखा। लेख, कविता, कहानी आदि लिखते समय किन चरित्रों, पात्रों और सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों को सामने रखना है, इस पर सदस्यों को उदाहरण के साथ बताया।

अल्पाहार के बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष रामचन्द्र कटियार ने भारतीय संविधान से संबंधित बातों को बताया और कई चीजों की जानकारी को पुष्ट किया। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ।

अंतिम दिन (02 अक्टूबर) को कार्यकर्ताओं को किस रूप में सभाओं, गोष्ठियों में अपनी बात रखनी चाहिए इस पर रामचन्द्र कटियार ने अपनी बातों को केन्द्रित किया। भोजनोपरांत प्रशिक्षण शिविर के समाप्ति की घोषणा की गई।

प्रशिक्षण के बाद क्रांतिकारी किसान यूनियन के साथियों के साथ एक बैठक रखी गई जिसमें मजदूरों-किसानों के मुद्दे पर साझा आन्दोलन / कार्यक्रम चलाने की संभावना पर विचार किया गया और इस पर सहमति बनाई गई। ■

**मंडल कमंडल दंगे-फसाद, भ्रष्ट सरकार झूठी संसद, नपुंसक विरोध इनसे निजात पाने की राह क्या है आत्म समर्पण या इंकलाब?** ■



## कम्युनिस्ट पार्टी पर हिन्दुस्तानी साम्राज्यवादियों का कब्जा : कम्युनिस्ट पार्टी बेनकाब

[गत 24 फरवरी की सुबह 5.45 बजे मैं दिल्ली के पालम हवाई अड्डे पटना आने के लिए पहुँचा, हवाई जहाज में बैठने के आवाह का इन्तजार कर रहा था। मेरी बगल में एक परदेशी आकर खड़े हो गए। मुझको ऊपर-नीचे गौर से देखने के बाद उन्होंने मुझसे पूछा—आप कहाँ जायेंगे? मैंने कहा—पटना। उन्होंने कहा आप कौन हैं? मैंने अपना नाम बताया और यह भी बताया कि मैं शोषित दल का एक सदस्य हूँ। बातें अंग्रेजी में हो रही थी। उन्होंने कहा कि आपकी बगल की सीट पर बैठकर आपके साथ हवाई यात्रा करना चाहता हूँ। मैंने उनकी इच्छा पर प्रसन्नता व्यक्त की। इतने में हवाई जहाज में हम एक दूसरे की बगल में बैठ गए। हवाई जहाज ने उड़ान लिया। मैंने अपने अनजाने दोस्त से पूछा—आप कौन हैं और पटना क्यों जा रहे हैं? उन्होंने अपना नाम पाल गार्ड लेविन बताया और कहा कि मैं रूसी हूँ और पूर्वी अध्ययन संस्थान मास्को में इतिहास का प्राध्यापक हूँ। उन्होंने यह भी बताया कि मध्यावधि चुनाव का अध्ययन करने के लिए मैं चन्द दिनों के लिए बिहार जा रहा हूँ। फलतः मेरी उनमें और उनकी मुझमें दिलचस्पी बढ़ती चली गई। जो बातचीत हुई वह प्रश्नोत्तर के रूप में हुई। इसलिए मैं उसी रूप में यहाँ उल्लेख कर देना चाहता हूँ। — जगदेव प्रसाद]

**लेविन**—आप कम्युनिस्ट क्यों नहीं हैं?

**जगदेव**—क्योंकि डांगे, नम्बूदरीपाद, ज्योति बसु, पी० सी० जोशी, चन्द्रशेखर सिंह और इन्द्रदीप सिंह जैसे कुलांक पार्टी में भरे पड़े हैं और ऐसे ही लोग कम्युनिस्ट पार्टी के सर्वेसर्वा हैं। इसलिए मेरे जैसा आदमी कम्युनिस्ट पार्टी में नहीं है।

**लेविन**—ये और इन लोगों के जैसा आदमी कम्युनिस्ट पार्टी में सर्वेसर्वा हैं, इसलिए आप कम्युनिस्ट पार्टी में क्यों नहीं हैं?

**जगदेव**—(क) ये सभी ऊँची जाति के हैं। (ख) और करोड़पति हैं। ये लोग शोषण के विज्ञान और कला में प्रवीण हैं। रूस में कुलांक जारशाही के खिलाफ सर्वहारा ने कम्युनिस्ट आन्दोलन प्रारम्भ किया, लेकिन हिन्दुस्तान में कुलांक कम्युनिस्ट आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। वही उनके नेता बने हैं 'एक तो करैला दूसरे चढ़ी नीम।' एक तो ऊँची जाति दूसरे लखपति-करोड़पति।

**लेविन**—क्या ऊँची जाति के लोग कम्युनिस्ट नहीं हो सकते हैं?

**जगदेव**—क्या अमेरिका का शासक वर्ग कम्युनिस्ट हो सकता है?

**लेविन**—नहीं, कभी नहीं।

**जगदेव**—जिस तरह अमेरिका का शासक वर्ग कम्युनिस्ट नहीं हो सकता, उसी तरह हिन्दुस्तान का शासक वर्ग जो ऊँचा जाति का है, वह न तो कम्युनिस्ट हो सकता है न इन्कलाबी। हिन्दुस्तान के कम्युनिस्ट ऊँची जाति के अमीर हैं, इसलिए ऊँची जात प्रधान कम्युनिस्ट पार्टी से सर्वहारा क्रांति की उम्मीद करना उतना ही ठीक होगा, जितना अमेरिका के साम्राज्यवादियों से कम्युनिस्ट इन्कलाब की उम्मीद करना। जो हिन्दुस्तान में शासक वर्ग रहा है, उसी के हाथ में कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व है। जो 90 प्रतिशत शोषितों का दुश्मन है वही कम्युनिस्ट पार्टी का सर्वेसर्वा है। जो वर्ग संघर्ष के विरोधी हैं, वे ही ऊपरी तौर पर कम्युनिज्म का चोंगा पहन कर वर्ग-संघर्ष के हिमायती बने हैं। आज हिन्दुस्तान में दस प्रतिशत ऊँची जाति को काला साम्राज्यवादी मानते

(प्रस्तुत विचार शहीद जगदेव बाबू के हैं, जो 25 अगस्त, 1969 के शोषित में प्रकाशित हुआ था, जिसे हम 'फरवरी अंक' में दस्तावेज के रूप में छाप रहे हैं। —प्रधान सम्पादक)

हैं। आपके लिए अमेरिका साम्राज्यवादी है। हमारे लिए तो हिन्दुस्तान का ऊँची जात साम्राज्यवादी है। ऊँची जात के 10 प्रतिशत शोषकों ने नब्बे प्रतिशत शोषितों को आज तक गुलाम बनाकर रखा है। सभी राजनीतिक दलों पर इन्हीं का कब्जा है।

**लेविन**—रूस के सर्वहारा में और हिन्दुस्तान के सर्वहारा में क्या फर्क है?

**जगदेव**—रूस में सिर्फ आर्थिक नाबराबरी थी इसलिए वहाँ सिर्फ आर्थिक शोषण से मुक्ति की समस्या थी। हिन्दुस्तान में आर्थिक नाबराबरी के साथ-साथ सामाजिक गैरबराबरी भी है। जीवन के सभी सार्वजनिक क्षेत्रों पर 10% ऊँची जाति का एकाधिकार जैसा है। 90 प्रतिशत शोषित ऊँची जाति की मेहरबानी और भीख के सहारे जिन्दगी गुजारने को मजबूर है। रूस में या दुनिया के अन्य देशों में जाति प्रथा नाम की कोई चीज नहीं है। इसलिए जो वर्ग-संघर्ष का स्वरूप दुनिया के अन्य देशों में रहा ठीक वही हिन्दुस्तान के लिए नहीं रह सकता। हिन्दुस्तान में कुछ बड़ी जातियाँ हैं जिनकी संख्या 10 प्रतिशत से ज्यादा नहीं है। बाकी छोटी जातियाँ हैं जैसे—दलित, आदिवासी, मुसलमान और पिछड़ी जातियाँ। ये ऊँची जातियों के शोषण के शिकार हैं और ये साम्राज्यवाद के खूनी चंगुल से मुक्ति चाहती है। अमेरिका के निग्रो हिन्दुस्तान के दलितों से ज्यादा अच्छा हालत में है। अगर मार्क्स लेनिन हिन्दुस्तान में पैदा होते तो यहाँ की ऊँची जाति को शोषक वर्ग और साम्राज्यवादी करार देते। इसलिए जो रूस में मार्क्स का सर्वहारा है ठीक वही हिन्दुस्तान में शोषित नहीं हो सकता। रूस का सर्वहारा (शोषित) आर्थिक और सामाजिक दोनों ख्यालों से सर्वहारा है। हिन्दुस्तान का सर्वहारा सांस्कृतिक दृष्टि से भी गुलाम है।

**लेविन**—हिन्दुस्तान के लिए मार्क्सवादी संघर्ष या वर्ग संघर्ष क्या हो सकता है।

**जगदेव**—हिन्दुस्तान में एक वर्ग दस प्रतिशत ऊँची जाति के साम्राज्यवादियों का है और दूसरा वर्ग 90 प्रतिशत शोषितों का है। इसी 90 प्रतिशत सर्वहारा की इज्जत और रोटी की लड़ाई हिन्दुस्तान के लिए मार्क्सवादी या वैज्ञानिक वर्ग-संघर्ष है। यही सत्य है। बाकी हिन्दुस्तान के लिए वर्ग संघर्ष की दूसरी सभी परिभाषाएँ और व्याख्याएँ गलत हैं। व्यवहारिक वर्ग-संघर्ष यही है।

**लेविन**—क्या हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट मार्क्सवादी या वर्ग-संघर्ष के हिमायती नहीं हैं?

**जगदेव**—नहीं! बाघ-बकरी की हिमायती कर ही नहीं सकता। जो लोग बाघ और बकरी को एक साथ लाना चाहते हैं, वे या तो मूर्ख हैं या फरेबी हैं। हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट न तो सही माने में मार्क्सवादी हैं न वर्ग-संघर्ष या वैज्ञानिक समाजवाद के हिमायती। वास्तव में कम्युनिस्ट पार्टी हिन्दुस्तान में साम्राज्यवादियों की जमात है। जबतक कम्युनिस्ट नेतृत्व दलित, पिछड़ी जाति, आदिवासी और मुसलमानों (जो 90 प्रतिशत हैं और जिन्हें हम शोषित कहते हैं) के हाथ में नहीं आ जाता, तबतक कम्युनिस्ट पार्टी की सर्वहारा का दोस्त समझना अब्बल दर्जे की वेबकूफी होगी। वास्तव में कम्युनिस्ट नेतृत्व से अन्य सभी दलों का नेतृत्व ज्यादा इन्कलाबी और जन-तांत्रिक है।

**लेविन**—हिन्दुस्तान में दो कम्युनिस्ट पार्टियाँ हैं। दोनों की बनावट में कोई फर्क है?

**जगदेव**—जहाँ सिद्धांत का प्रश्न है,

दक्षिणपंथी पार्टियाँ रूस के साथ बंधी है और बामपंथी कम्युनिस्ट पार्टी चीन की हिमायत करती है। दोनों कम्युनिस्ट पार्टियाँ विदेशी मामलों में बहुत ज्यादा उलझी रहती है। हिन्दुस्तान की समस्याओं के बारे में सोचने की उनकी फुर्सत नासमझी की ही रहती है। जहाँ तक नेतृत्व का सवाल है, दोनों के नेतृत्व में कोई फर्क नहीं है। दोनों का नेतृत्व हिन्दुस्तान के ऊँची जाति के साम्राज्यवादियों के हाथ में है। ये लोग शोषकों के खिलाफ गरम-गरम भाषण तो देते हैं, लेकिन उन्हीं के खानदान होने के कारण उनके खिलाफ विनाशकारी घातक हमला करने में असमर्थ हो जाते हैं। ऐसा नेतृत्व गरीबों के प्रति ईमानदार और वफादार नहीं हो सकता। इनकी वफादारी और ईमानदारी सिर्फ भाषण तक ही सीमित है। ये गरीबों के लिए लुभावने नारे को गढ़ने में कमाल हासिल कर सकते हैं, लेकिन दोस्त अन्ततोगत्वा अमीरों के बन जाते हैं। खून जाकर खून में मिल जाता है।

**लेविन**—दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों में आप के हिसाब से ज्यादा क्रांतिकारी कौन है?

**जगदेव**—हमारे हिसाब से दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों में कोई भी क्रांतिकारी नहीं है। दोनों सिर्फ आर्थिक क्रांति पर जोर देती है, पर अब्बल दर्जे की फरेबी है। हिन्दुस्तान में मूल क्रांति सामाजिक क्रांति है। सामाजिक क्रांति के बगैर आर्थिक क्रांति हो ही नहीं सकती। फिर भी वामपंथी कम्युनिस्ट पार्टी ज्यादा गर्म पार्टी है।

**लेविन**—सामाजिक क्रांति से आपका क्या तात्पर्य है?

**जगदेव**—हिन्दुस्तान के सार्वजनिक क्षेत्रों पर ऊँची जातीय शोषक वर्ग का एकाधिकार जैसा है। 90 प्रतिशत शोषित प्रशासनिक सेवाओं में कारगर स्थानों पर नहीं के बराबर है। शोषित समाज के जो कुछ लोग हैं दाल में नमक के बराबर है, उनको भी ऊँची जात वाले दबाए हुए हैं। सभी राजनीतिक दलों पर इसी शोषक वर्ग का कब्जा है। इस पृष्ठभूमि में सामाजिक क्रांति को सफल बनाने के लिए राजनीत में विशेष अवसर के सिद्धांत को लागू करना होगा। डॉ० लोहिया ने सबसे पहले इस मुल्क में विशेष अवसर के सिद्धांत को गढ़ा जिसमें कोई शक नहीं है कि लोहिया के द्वारा विशेष अवसर के सिद्धांत के गढ़े जाने में मेरे जैसे व्यक्तियों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। डॉ० लोहिया ने विशेष अवसर के सिद्धान्त को मूर्तिमान करने के लिए कहा कि राजनीति, व्यापार, पलटन और ऊँची सरकारी नौकरियों में 90 प्रतिशत शोषितों के लिए कम-से-कम 60 सैकड़ा स्थान सुरक्षित कर देना चाहिए। हमारा दल (शोषित दल) 90 प्रतिशत शोषितों के लिए सार्वजनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में 90 सैकड़ा स्थान सुरक्षित करना सामाजिक क्रांति को सफल बनाने के लिए अनिवार्य समझता हूँ।

**लेविन**—जब सामाजिक क्रांति मूल क्रांति है और इसको सफल बनाने के लिए विशेष अवसर के सिद्धांत को अमलीजामा पहनाना जरूरी है तब कम्युनिस्ट पार्टी इसको क्यों नहीं मानती।

**जगदेव**—यह सवाल तो आपको कम्युनिस्ट पार्टी से ही पूछना चाहिए। लेकिन जब आपने मुझसे पूछा है तो मैं बताना चाहूँगा कि इसका एक ही कारण है कि कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व ऊँची जाति के सामंतों और

साम्राज्यवादियों के हाथ में है जो कभी सामाजिक क्रांति के बारे में सोच ही नहीं सकते। मुझे जनसंघ के नेतृत्व और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व की बनावट में कोई फर्क दिखलाई नहीं पड़ता। दोनों पार्टियों के नाम एक दूसरे से भिन्न जरूर है लेकिन नेतृत्व का खानदान एक ही है। दोनों के नेतृत्व का खानदान शोषक वर्ग ही है।

**लेविन**—आप विशेष अवसर के सिद्धांत को अमल में लाने के लिए क्या करेंगे?

**जगदेव**—अभी तो जनतांत्रिक तरीके से हम ऊँची जाति को सम्हलने के लिए कह रहे हैं और अपने सिद्धांत के पीछे 90 प्रतिशत शोषित जनता को संगठित करने का प्रयास कर रहे हैं। जब 90 प्रतिशत शोषित जनता शोषित दल के झंडे के नीचे सामाजिक क्रांति के लिए तैयार हो जायेगी तो शोषक वर्ग या तो आत्म समर्पण कर देगा या उसे 90 प्रतिशत शोषितों की संगठित महान शक्ति नेस्तनाबूद कर देगी।

**लेविन**—1967 के आम चुनाव के बाद बिहार में संयुक्त मोर्चे की सरकार बनी थी, उस समय आपका शोषित दल नहीं था, तब आप किस दल में थे और उस समय कम्युनिस्ट पार्टी ने कैसा काम किया।

**जगदेव**—यह बात ठीक है कि 1967 के आम चुनाव के बाद संयुक्त मोर्चे की सरकार थी। उस समय शोषित दल नहीं था। संयुक्त मोर्चे की ही सरकार के 16 मंत्रियों में 11 मंत्री ऊँची जाति के सामंत और प्रतिक्रियावादी थे, इसमें कम्युनिस्ट पार्टी और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी भी शामिल थी। कम्युनिस्ट पार्टी के दोनों मंत्री ऊँची जाति में एक ही जाति के सामंत थे, संसोपा ने भी पिछड़ों के लिए 60 सैकड़ा सिद्धांत का पालन नहीं किया था। इसके छः मंत्रियों में तीन ऊँची जाति के थे। पूरे मन्त्रिमण्डल में एक भी दलित या आदिवासी मंत्री नहीं थे। संयुक्त मोर्चे की सरकार में 90% शोषित जनता 10% शोषकों के जुल्म से नाकोदम हो रही थी। मन्त्रिमण्डल में शोषित जनता के हकों के लिए संघर्ष करने वाला कोई न रह गया था। इसलिए हमलोगों ने संयुक्त मोर्चे की सरकार को तोड़ना शोषितों के हक में समझा। मैं उस समय संसोपा में था। संसोपा के सर्वोच्च पदों पर भी रहने का मुझे मौका मिला था। फिर भी संयुक्त मोर्चे की सरकार द्वारा 90 प्रतिशत शोषितों की उपेक्षा मेरे लिए बर्दाश्त करना संभव नहीं हुआ। संसोपा अपने सिद्धांतों से बहुत दूर हट गई थी। सिद्धांत खत्म हो गया था, सिर्फ पाखण्ड रह गया था। इसलिए हमलोगों ने संयुक्त मोर्चे की सरकार को तोड़ा और संसोपा को भी छोड़ा। संयुक्त मोर्चे की सरकार के एक वरिष्ठ मंत्री बी० पी० मंडल ने उस सरकार के शोषित विरोधी रवैये के खिलाफ इस्तीफा दे दिया और शोषित दल बनाने में अगुआई की। आज वे ही हमारे दल के अध्यक्ष हैं और लोकसभा के सदस्य भी हैं। उन्हीं के मुख्य-मन्त्रित्व में शोषित दल की सरकार बनी थी जिसमें 75 प्रतिशत मंत्री शोषित समाज के थे। ऐसी क्रांतिकारी सरकार हिन्दुस्तान में एक ही बनी और वह है मद्रास में डी०एम०के० की सरकार। वह सरकार निछक्की शोषितों की है जिसमें शोषक वर्ग का कोई मंत्री नहीं है।

जहाँ तक संयुक्त मोर्चे की सरकार में कम्युनिस्ट पार्टी का सवाल है इसके दोनों मंत्री न सिर्फ एक ही सामंती जाति के थे

(शेष पृष्ठ 7 पर)

भारतीय राष्ट्र और समाज के पूर्ण आधुनिकीकरण के लिए पेरियार अनिवार्य और अपरिहार्य क्यों हैं- पेरियार की जयंती ( 17 सितंबर ) पर सादर नमन के साथ पेरियार के विचारों-संघर्ष का एक संक्षिप्त ब्यौरा

★ सिद्धान्त रामू

भारतीय समाज और व्यक्ति का मुकम्मल आधुनिकीकरण जिन चिंतकों के विचारों के आधार पर होना है, उनमें ई०वी० रामासामी पेरियार अग्रणी हैं। पेरियार ने उन सभी बिंदुओं को चिह्नित और रेखांकित किया है जिनका खात्मा भारतीय समाज के आधुनिकीकरण की अनिवार्य शर्त है।

ई०वी० रामासामी नायकर ‘पेरियार’ भारत की प्रगतिशील श्रमण बहुजन-परंपरा के ऐसे लेखक हैं जिन्होंने उत्तर भारत के द्विजों की आर्य श्रेष्ठता और मर्दवादी दंभ, राष्ट्रवाद, ब्राह्मणवाद, वर्ण-जाति व्यवस्था, ब्राह्मणवादी पितृसत्ता और शोषण-अन्याय के सभी रूपों को चुनौती दी। वर्चस्व, अन्याय, असमानता और दासता का कोई रूप उन्हें स्वीकार नहीं था। उनकी आवेगात्मक अभिव्यक्ति पढ़ने वालों को हिला देती है। तर्क-पद्धति, तेवर और अभिव्यक्ति की शैली के चलते उन्हें यूनेस्को ने 1970 में “दक्षिणी एशिया का सुकरात” कहा था।

पेरियार 1920 से 1925 तक कांग्रेस पार्टी के साथ जुड़े रहे। वह औपचारिक तौर पर 1920 में कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए और 1920 और 1924 में वह तत्कालीन मद्रास प्रेसीडेंसी के कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष और 1921 और 1922 में उसके सचिव रहे। इस दौरान उन्होंने गांधी के सशक्त सहयोगी के रूप में काम किया लेकिन कांग्रेस और गांधी के साथ काम करते हुए बहुत जल्दी उन्हें अहसास हो गया कि यह पार्टी और गांधी उत्तर भारतीय आर्य-द्विज मर्दों के वर्चस्व को कायम रखने का उपकरण हैं। उन्होंने कांग्रेसी पाटी के भीतर काम करने के अपने अनुभवों के बारे में लिखा :

जब मैं तमिलनाडु कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष था, तो मैंने 1925 के सम्मेलन में एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। उस प्रस्ताव में मैंने जातिविहीन समाज के निर्माण का प्रस्ताव किया था। मेरे मित्र चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (राजाजी) ने इसे अस्वीकृत कर दिया था। मैंने यह भी अनुरोध किया था कि कांग्रेस के विभिन्न पक्षों और क्षेत्रों में सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व (वर्चित एवं अल्पसंख्यक तबकों के लिए आरक्षण) का पालन किया जाना चाहिए, लेकिन यह प्रस्ताव भी विषय समिति में थिरु वि० का० (एक सम्मानित तमिल विद्वान कल्यानासुन्दरानर) के द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया। तब मुझे अपने प्रस्ताव के समर्थन में 30 प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर प्राप्त करने के लिए कहा गया था। श्री एस० रामानाथन ने 50 प्रतिनिधियों से हस्ताक्षर प्राप्त कर लिए, तब सर्वश्री सी० राजगोपालाचारी, श्रीनिवास आर्यंगर, सत्यमूर्ति और अन्य लोगों ने अपना प्रतिरोध दर्ज कराया। उन्हें डर था कि अगर मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया, तो कांग्रेस खत्म हो जाएगी। बाद में यह प्रस्ताव थिरु वि० का० और डॉ० पी० वरदाराजुलू के द्वारा रोक दिया गया। ब्राह्मण बहुत खुश हुए। इतना ही नहीं, उन्होंने मुझे सम्मेलन में बोलने की इजाजत भी नहीं दी।

पेरियार ने बाद में कांग्रेस के बारे में लिखा, “कांग्रेस पार्टी से अकेले ब्राह्मण और धनी लोग ही लाभ उठा रहे हैं। यह आम आदमी, गरीब आदमी और श्रमिक वर्गों के लिए अच्छा काम नहीं करेगी। यह बात मैं

काफी लम्बे समय से कह रहा था।”

कांग्रेस के अध्यक्ष या सचिव के रूप में तमिलनाडु में ब्राह्मणवाद और ब्राह्मणों के वर्चस्व को तोड़ने की हर कोशिश को कांग्रेस पार्टी पर अपना वर्चस्व कायम रखने वाले द्विज मर्दों ने नाकाम कर दिया। इतना ही नहीं, गांधी ने स्पष्ट शब्दों में तमिलनाडु में सार्वजनिक तौर पर वर्ण-व्यवस्था की महानता और ब्राह्मणों की श्रेष्ठता की घोषणा की। भीखू पारेख ने अपनी किताब कोलेनिज्म, ट्रेडिशन एंड रिफॉर्म : एनालिसिस ऑफ गांधी पोलिटिकल डिस्कोर्स में गांधी को उद्धृत करते हुए बताया है कि गांधी ने कहा था, “वर्णाश्रम धर्म अभिशाप नहीं है; बल्कि यह उन बुनियादों में से एक है, जिन पर हिंदू धर्म टिका हुआ है और यह (वर्णाश्रम धर्म) बताता है कि धरती पर जन्म लेने का इंसान का उद्देश्य क्या है? गांधी आगे कहते हैं, “ब्राह्मण हिंदू-धर्म और मानवता के सबसे खूबसूरत फूल हैं।’ वह आगे अपनी बात पर जोर देते हुए कहते हैं, “मुझे इनके (ब्राह्मणों) लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है। ये अपनी हिफाजत खुद ही अच्छी तरह कर सकते हैं। ये पहले भी बहुत सारे तूफानों का सामना कर चुके हैं। मुझे गैर-ब्राह्मणों से सिर्फ इतना कहना है कि वे इन फूलों (ब्राह्मणों) को उनकी खुशबू और चमक के साथ रौंद देने की कोशिश कर रहे हैं।”

पेरियार ने वामपंथियों के साथ मिलकर भी काम किया लेकिन उन्होंने देखा कि वामपंथियों द्वारा जाति, पितृसत्ता और धर्म के गठजोड़ की उपेक्षा की जा रही है। वामपंथियों की वर्ग की यांत्रिक यूरोपीय धारणा, इतिहास की एक रेखीय आर्थिक व्याख्या और जाति, पितृसत्ता, धर्म, राष्ट्रवाद और वर्ग के गठजोड़ को समझ पाने में नाकामी के चलते पेरियार को उनसे भी अपना रास्ता अलग करना पड़ा। पेरियार ने भारत के वामपंथियों के बारे में लिखा, “हमारे देश में साम्यवाद की जितनी भी बातें हो रही हैं, वे बकवास हैं... वे जातिवाद की दुष्टता और प्रतिक्रियावादी गांधी के दुष्प्रचार के कुप्रभावों के प्रति चिंतित नहीं लगते। वे उस राजाजी के प्रति चिंतित नहीं हैं जिनकी चिंता सिर्फ यह है कि ब्राह्मण कैसे सुख से जीवित रहेंगे। वे उस कांग्रेस पार्टी के बारे में चिंतित नहीं हैं, जो वर्णाश्रम धर्म को सही ठहराती है।” बाद में पेरियार ने तमिलनाडु में गैर-ब्राह्मणवाद की अगुवा जस्टिस पार्टी के साथ भी मिलकर काम किया।

जस्टिस पार्टी की स्थापना सन 1916 में (आधुनिक चेन्नई) में हुई थी। तमिलनाडु में द्रविड़ आंदोलन की औपचारिक शुरुआत 1916 में तब हुई, जब जस्टिस पार्टी ने गैर-ब्राह्मण घोषणा-पत्र जारी किया। ब्राह्मणवाद बनाम गैर-ब्राह्मणवाद का संघर्ष ही इस घोषणा-पत्र का मूल स्वर था। मद्रास प्रेसीडेंसी में ब्राह्मणों का वर्चस्व किस कदर था, इसका अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि 1912 में वहां ब्राह्मणों की आबादी सिर्फ 3.2 प्रतिशत थी, जबकि 55 प्रतिशत जिला अधिकारी और 72.2 प्रतिशत जिला जज ब्राह्मण थे। मंदिरों और मठों पर ब्राह्मणों का कब्जा तो था ही जमीन की मिल्कियत भी उन्हीं लोगों के पास थी। इस प्रकार तमिल समाज के जीवन के सभी क्षेत्रों में ब्राह्मणों

का वर्चस्व था। इस वर्चस्व को तोड़ने के लिए ब्राह्मण विरोधी आंदोलन शुरू हुआ। 1915-1916 के आस-पास मंझोली जातियों की ओर से सी०एन० मुलियार, टी० एन० नायर और पी० त्यागराज चेट्टी ने जस्टिस आंदोलन की स्थापना की थी। इन मंझोली जातियों में तमिल वल्लाल, मुदलियाल और चेट्टिट्यार प्रमुख थे। इनके साथ ही इसमें तेलुगु रेड्डी, कम्मा, बलीचा नायडू और मलयाली नायर भी शामिल थे। 1920 में मोंटेग-चेम्सफोर्ड सुधारों के अनुसार मद्रास प्रेसीडेंसी में एक द्विशासन प्रणाली बनायी गई जिसमें प्रेसीडेंसी में चुनाव कराने के प्रावधान किए गए। इस चुनाव में जस्टिस पार्टी ने भाग लिया और एक गैर-ब्राह्मणों के नेतृत्व और प्रभुत्व वाली जस्टिस पार्टी सत्ता में आई। इस पार्टी के नेतृत्व में पहली बार तमिलनाडु में 1921 में सरकारी नौकरियों में गैर ब्राह्मणों के लिए आरक्षण लागू हुआ।

लेकिन पेरियार ने देखा कि जस्टिस पार्टी तमिलनाडु में ब्राह्मणों के राजनीतिक वर्चस्व को तोड़कर गैर-ब्राह्मणों के राजनीतिक वर्चस्व को तो कायम करना चाहती है, मगर वर्चस्व और अन्याय के अन्य रूपों के खिलाफ वह चुप रहती है जबकि वह एक ऐसे क्रांतिकारी बदलाव के लिए संघर्ष कर रहे थे जिसमें वर्चस्व और अन्याय के सभी रूपों का खात्मा हो जाए और ऐसी दुनिया का निर्माण हो जहां किसी तरह का अन्याय और शोषण न हो। उन्होंने अपने आंदोलन को आत्मसम्मान-आंदोलन (सेल्फ रिस्पेक्ट मूवमेंट) नाम दिया। पेरियार ने अपनी पत्रिका ‘कुदी आरसू’ में 20 अक्टूबर 1945 को लिखा कि “देश में बहुत सारे आंदोलन चल रहे हैं... कांग्रेस पार्टी ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष कर रही है। जस्टिस पार्टी ब्राह्मणों के राजनीतिक वर्चस्व के खिलाफ संघर्ष कर रही है। आदि द्रविड़ पार्टी उच्च जातीय हिंदुओं के वर्चस्व के खिलाफ संघर्ष कर रही है और वर्कर्स पार्टी पूंजीपतियों के वर्चस्व के खिलाफ संघर्ष कर रही है। इस तरह हर एक पार्टी का उद्देश्य वर्चस्व के किसी एक रूप का खात्मा करना है। लेकिन, यदि कोई पार्टी वर्चस्व के सभी रूपों के खिलाफ एक साथ संघर्षरत है, तो वह आत्मसम्मान-आंदोलन है।”

पेरियार भारत में चल रहे स्वराज आंदोलन के उद्देश्य के संदर्भ में प्रश्न करते हैं :

हम जोर-शोर से स्वराज की बात कर रहे हैं। क्या स्वराज आप तमिलों के लिए है या उत्तर भारतीयों के लिए है? क्या यह आपके लिए है या पूंजीवादियों के लिए है? क्या स्वराज आपके लिए है या कालाबाजारियों के लिए है? क्या यह मजदूरों के लिए है या उनका खून चूसने वालों के लिए है?

अपने आत्मसम्मान-आंदोलन के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए पेरियार लिखते हैं, “आत्मसम्मान आंदोलन का मकसद उन ताकतों का पता लगाना है, जो हमारी प्रगति में बाधक बनी हुई हैं। यह उन ताकतों का मुकाबला करेगा, जो समाजवाद के खिलाफ काम करती हैं। यह समस्त धार्मिक प्रतिक्रियावादी ताकतों का विरोध करेगा।”

पेरियार का भविष्य की दुनिया का सपना मार्क्स-एंगेल्स के साम्यवाद के सपने

से मेल खाता है। अपने लेख ‘भविष्य की दुनिया’ में अपने आदर्श समाज की परिकल्पना प्रस्तुत करते हुए उन्होंने तमिल पुस्तक इन वारुम उल्लगम में लिखा :

नए विश्व में किसी को कुछ भी चुराने या हड़पने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। पवित्र नदियों जैसे कि गंगा के किनारे रहने वाले लोग उसके पानी की चोरी नहीं करेंगे। वे केवल उतना ही पानी लेंगे, जितना उनके लिए आवश्यक है। भविष्य के उपयोग के लिए वे पानी को दूसरों से छिपाकर नहीं रखेंगे। यदि किसी के पास उसकी आवश्यकता की वस्तुएं प्रचुर मात्रा में होंगी, तो वह चोरी के बारे में सोचेगा तक नहीं। इसी प्रकार किसी को झूठ बोलने, धोखा देने या मक्कारी करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। क्योंकि, उससे उसे कोई प्राप्ति नहीं हो सकेगी। नशीले पेय किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। न कोई किसी की हत्या करने का ख्याल दिल में लाएगा। वक्त बिताने के नाम पर जुआ खेलने, शर्त लगाने जैसे दुर्व्यसन समाप्त हो जाएंगे। उनके कारण किसी को आर्थिक बरबादी नहीं झेलनी पड़ेगी।”

इसी किताब में वह आगे लिखते हैं, “पैसे की खातिर अथवा मजबूरी में किसी को वेश्यावृत्ति के लिए विवश नहीं होना पड़ेगा। स्वाभिमानी समाज में कोई भी दूसरे पर शासन नहीं कर पाएगा। कोई किसी से पक्षपात की उम्मीद नहीं करेगा। ऐसे समाज में जीवन और काम-संबंधों को लेकर लोगों का दृष्टिकोण उदार एवं मानवीय होगा। वे अपने स्वास्थ्य की देखभाल करेंगे। प्रत्येक व्यक्ति में आत्मसम्मान की भावना होगी। स्त्री-पुरुष दोनों एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करेंगे और किसी का प्रेम बलात् (जबरन) हासिल करने की कोशिश नहीं की जाएगी। स्त्री-दासता के लिए कोई जगह नहीं होगी। पुरुष सत्तात्मकता मिटेगी। दोनों में कोई भी एक-दूसरे पर बल-प्रयोग नहीं करेगा। आने वाले समाज में कहीं कोई वेश्यावृत्ति नहीं रहेगी।”

भविष्य के जिस समाज का सपना पेरियार देखते हैं, उसकी भारत में स्थापना की पहली शर्त वह अंबेडकर की तरह जाति के विनाश को मानते थे। उनका मानना था कि वर्ण-जाति की रक्षा के लिए हिंदू-धर्म की स्थापना की गई। वर्ण-जाति की रक्षा के लिए जन्म लेने वाले ईश्वरों को गढ़ा गया है और मनुस्मृति, रामायण, गीता और पुराणों की रचना की गई है। उन्होंने लिखा, “इस जाति-व्यवस्था ने भारतीय समाज को जड़ और बर्बर समाज में तब्दील कर दिया है।” 1959 में उन्होंने लिखा, “हमारे देश में जाति के विनाश का मतलब है- भगवान, धर्म, शास्त्र और ब्राह्मणों (ब्राह्मणवाद) का विनाश। जाति तभी खत्म हो सकती है, जब ये चारों भी खत्म हो जाएं। यदि इसमें से एक भी बना रहता है, तो जाति का विनाश नहीं हो सकता।”

लेकिन ब्राह्मणों के खात्मे से उनका सीधा मतलब ब्राह्मणवाद के खात्मे से है। इस संदर्भ में वह लिखते हैं कि उन्हें “ब्राह्मण-प्रेस द्वारा ब्राह्मण-विरोधी के रूप में चित्रित किया गया है। किन्तु, मैं व्यक्तिगत रूप से किसी भी ब्राह्मण का दुश्मन नहीं हूं।

( शेष पृष्ठ 8 पर )

## धारा के विपरीत तैरने वाला तैराक ललई सिंह

ललई सिंह यादव (01 सितम्बर 1911 – 07 फरवरी 1993) सामाजिक कार्यकर्ता (ऐक्टिविस्ट) थे जिन्होंने सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष किया और सामाजिक न्याय के अपने लक्ष्य के लिए अनेक पुस्तकों की रचना की जो अत्यन्त विवादित रहीं। ललई को उत्तर भारत का ‘पेरियार’ कहा जाता है।

ललई का जन्म 01 सितम्बर 1911 को उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात जिले के कठारा ग्राम में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ था। पिता चौ० गुज्जू सिंह यादव एक कर्मठ आर्य समाजी थे। इनकी माता श्रीमती मूलादेवी, उस क्षेत्र के जनप्रिय नेता चौ० साधू सिंह यादव निवासी ग्राण मकर दादुर रेलवे स्टेशन रूरा, जिला कानपुर की साध्वी पुत्री थी। इनके मामा चौ० नारायण सिंह यादव धार्मिक और समाज सेवी कृषक थे। पुराने धार्मिक होने पर भी यह परिवार अंधविश्वास रूढ़ियों के पीछे दौड़ने वाला नहीं था।

ललई सिंह ने सन् 1928 में हिन्दी के साथ उर्दू लेकर मिडिल पास किया। सन् 1929 से 1931 तक फॉरेस्ट गार्ड रहे। 1931 में ही इनका विवाह श्रीमती दुलारी देवी पुत्री चौ० सरदार सिंह यादव ग्राम जैरैला निकट रेलवे स्टेशन रूरा जिला कानपुर के साथ हुआ। 1933 में सशस्त्र पुलिस कम्पनी जिला मुरैना (म०प्र०) में कान्स्टेबिल पद पर भर्ती हुए। नौकरी से समय बचा कर विभिन्न शिक्षायें प्राप्त की। सन् 1946 ईस्वी में नान गजेटेड मुलाजिमान पुलिस एण्ड आर्मी संघ ग्वालियर कायम कर के उसके अध्यक्ष चुने गए। ‘सोल्जर ऑफ दी वार’ ढंग पर हिन्दी में “सिपाही की तबाही” किताब लिखी, जिसने कर्मचारियों को क्रांति के पथ पर विशेष अग्रसर किया। इन्होंने आजाद हिन्द फौज की तरह ग्वालियर राज्य की आजादी के लिए जनता तथा सरकारी मुलाजिमान को संगठित करके पुलिस और फौज में हड़ताल कराई जवानों से कहा कि

**बलिदान न सिंह का होते सुना,**

**बकरे बलि बेदी पर लाए गये।**

**विषधारी को दूध पिलाया गया,**

**केंचुए कटिया में फंसाए गये।**

**न काटे टेढ़े पादप गये,**

**सीधों पर आरे चलाए गये।**

**बलवान का बाल न बांका भया**

**बलहीन सदा तड़पाये गये।**

दिनांक 29.03.47 ईस्वी को ग्वालियर स्टेट्स स्वतंत्रता संग्राम के सिलसिले में पुलिस व आमी में हड़ताल कराने के आरोप धारा 131 भारतीय दण्ड विधान (सैनिक विद्रोह) के अंतर्गत साथियों सहित राज-बन्दी बने। दिनांक 06.11.1947 ईस्वी को स्पेशल क्रिमिनल सेशन जज ग्वालियर ने 5 वर्ष स-श्रम कारावास तथा पाँच रूपये अर्थ दण्ड का सर्वाधिक दण्ड अध्यक्ष हाई कमाण्डर ग्वालियर नेशनल आर्मी होने के कारण दी। दिनांक 12.01.1948 ईस्वी को सिविल साथियों सहित बंधन मुक्त हुये।

उसी समय यह स्वाध्याय में जुटे गये। एक के बाद एक इन्होंने श्रुति, स्मृति, पुराण और विविध रामायणें भी पढ़ीं। हिन्दू शास्त्रों में व्याप्त घोर अंधविश्वास, विश्वासघात और पाखण्ड से वह तिलमिला उठे। स्थान-स्थान पर ब्राह्मण महिमा का बखान तथा दबे पिछड़े शोषित समाज की मानसिक दासता के षड्यन्त्र

से वह व्यथित हो उठे। ऐसी स्थिति में इन्होंने यह धर्म छोड़ने का मन भी बना लिया। अब वह इस निष्कर्ष पर पहुंच गये थे कि समाज के ठेकेदारों द्वारा जानबूझ कर सोची समझी चाल और षड्यन्त्र से शूद्रों के दो वर्ग बना दिये गये है। एक सख्त-शूद्र, दूसरा अख्त-शूद्र, शूद्र तो शूद्र ही है। चाहे कितना सम्पन्न ही क्यों न हो।

उनका कहना था कि सामाजिक विषमता का मूल, वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, श्रुति, स्मृति और पुराणों से ही पोषित है। सामाजिक विषमता का विनाश सामाजिक सुधार से नहीं अपितु इस व्यवस्था से अलगाव में ही समाहित है। अब तक इन्हें यह स्पष्ट हो गया था कि विचारों के प्रचार प्रसार का सबसे सबल माध्यम लघु साहित्य ही है। इन्होंने यह कार्य अपने हाथों में लिया सन् 1925 में इनकी माताश्री, 1939 में पत्नी, 1946 में पुत्री शकुन्तला (11 वर्ष) और सन् 1953 में पिता श्री चार महाभूतों ने विलीन हो गये। अपने पिता जी के इकलौते पुत्र थे। पहली स्त्री के मरने के बाद दूसरा विवाह कर सकते थे। किन्तु क्रान्तिकारी विचारधारा होने के कारण इन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया और कहा कि अगली शादी स्वतन्त्रता की लड़ाई में बाधक होगी।

साहित्य प्रकाशन की ओर भी इनका विशेष ध्यान गया। दक्षिण भारत के महान क्रान्तिकारी पेरियार ई० व्ही० रामस्वामी नायकर के उस समय उत्तर भारत में कई दौर हुए। वह इनके सम्पर्क में आये। जब पेरियार रामास्वामी नायकर से सम्पर्क हुआ तो इन्होंने उनके द्वारा लिखित “रामायण : ए टू रीडिंग” (अंग्रेजी में) में विशेष अभिरूचि दिखाई। साथ ही दोनों में इस पुस्तक के प्रचार प्रसार की, सम्पूर्ण भारत विशेषकर उत्तर भारत में लाने पर भी विशेष चर्चा हुई। उत्तर भारत में इस पुस्तक के हिन्दी में प्रकाशन की अनुमति पेरियार रामास्वामी नायकर ने ललई सिंह को सन् 01-07-1968 को दे दी।

इस पुस्तक सच्ची रामायण के हिन्दी में 01-07-1969 को प्रकाशन से सम्पूर्ण उत्तर पूर्व तथा पश्चिम् भारत में एक तहलका सा मच गया। पुस्तक प्रकाशन को अभी एक वर्ष ही बीत पाया था कि उ०प्र० सरकार द्वारा 08-12-69 को पुस्तक जब्ती का आदेश प्रसारित हो गया कि यह पुस्तक भारत के कुछ नागरिक समुदाय की धार्मिक भावनाओं को जानबूझकर चोट पहुंचाने तथा उनके धर्म एवं धार्मिक मान्यताओं का अपमान करने के लक्ष्य से लिखी गयी है। उपरोक्त आज्ञा के विरुद्ध प्रकाशक ललई सिंह ने हाई कोर्ट आफ जुडीकेचर इलाहाबाद में क्रमिनल मिसलेनियस एप्लीकेशन 28-02-70 को प्रस्तुत की। माननीय तीन जजों की स्पेशल फुल बैंच इस केस के सुनने के लिए बनाई। अपीलांट (ललई सिंह) की ओर से नि:शुल्क एडवोकेट श्री बनवारी लाल यादव और सरकार की ओर से गवर्नमेन्ट एडवोकेट तथा उनके सहयोगी श्री पी.सी. चतुर्वेदी एडवोकेट व श्री आसिफ अंसारी एडवोकेट की बहस दिनांक 26, 27 व 28 अक्टूबर 1970 को लगातार तीन दिन सुनी। दिनांक 19-01-71 को माननीय जस्टिस श्री ए० के० कीर्ति, जस्टिस के० एन० श्रीवास्तव तथा जस्टिस हरी स्वरूप ने बहुमत का निर्णय दिया कि –

1. गवर्नमेन्ट ऑफ उ०प्र० की पुस्तक

## मानववादी, वैज्ञानिक सम शिक्षा लागू करो–अखिलेश कुमार

**कुर्था, 5 सितंबर।** शोषित समाज दल ने दल के संस्थापक , बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री शोषित इंकलाब के लेनिन अमर शहीद जगदेव प्रसाद के 52वें शहादत दिवस के अवसर पर कुर्था प्रखंड परिसर में शहादत स्थल के पास एक दिवसीय धरना दिया। सर्वप्रथम पूरे बाजार में एक रोषपूर्ण प्रदर्शन किया गया। तत्पश्चात झंडोतोलन दल के महामंत्री अखिलेश कुमार ने किया। धरना की अध्यक्षता शोसद के बिहार प्रदेश अध्यक्ष सुरजभान पासवान तथा संचालन युवा साथी अमरजीत कुशवाहा ने किया।

झंडोतोलन के बाद धरना को संबोधित करते हुए अखिलेश कुमार ने अपनी 14 सूत्री मांगों का समर्थन किया और कहा कि देश के सभी लड़के-लड़कियों को मुफ्त, अनिवार्य, मानववादी तथा सम शिक्षा लागू करना, किसानों के सभी कर्जे माफ करना, खेत मजदूरी अधिनियम लागू करना समय की मांग है। शोषित समाज दल पूरे दम-खम के साथ इन मांगों को लेकर आन्दोलन करेगा।

उद्घाटन भाषण करते हुए राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष रामानुज सिंह ने शहादत के कारणों

## अमर शहीद जगदेव प्रसाद का बलिदान नहीं भूलेगा मजदूर किसान

**पटना, 27 अगस्त।** शोषित समाज दल, केन्द्रीय कार्यालय पुरानी जक्कनपुर , पटना में पाटी के संस्थापक अमर शहीद जगदेव प्रसाद के प्रति कुछ असामाजिक तत्वों के द्वारा आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल करने के खिलाफ एक प्रेस कांफ्रेंस आयोजित किया गया। प्रेस को संबोधित करते हुए दल के महामंत्री अखिलेश कुमार और बिहार प्रदेश अध्यक्ष सुरजभान पासवान ने कहा कि शोषित इंकलाब के लेनिन अमर शहीद जगदेव प्रसाद ने खान-पान, उठन-बैठन, इज्जत-आबरू, शिक्षा-चिकित्सा-रोजगार में समानता की लड़ाई लड़ते हुए अपनी कुर्बानी दी। उनकी शहादत के बाद उनके विचारधारा, नीति व सिद्धांत पर चलनेवाले लाखों अनुयायी शोषितों का राज, शोषितों के लिए और शोषितों के द्वारा की लड़ाई पूरे मुल्क में लड़ रहे हैं। ऐसे में सामंती मानसिकता के कुछ तत्व, जो पूंजीवाद और साम्राज्यवाद के दलाल हैं, इस मिशन को बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं और शोषित इंकलाब के लेनिन अमर शहीद

‘सच्ची रामायण’ की जप्ती की आज्ञा निरस्त की जाती है।

2. जप्तशुदा पुस्तकें ‘सच्ची रामायण’ अपीलांट ललईसिंह को वापिस दी जाये।

3. गर्वन्मेन्ट ऑफ उ०प्र० की ओर से अपीलांट ललई सिंह को तीन सौ रूपये खर्च के दिलावें जावें।

ललई सिंह यादव द्वारा प्रकाशित ‘सच्ची रामायण’ का प्रकरण अभी चल ही रहा था कि उ०प्र० सरकारी की 10 मार्च 1970 की स्पेशल आज्ञा द्वारा ‘सम्मान के लिए धर्म परिवर्तन करें’ नामक पुस्तक जिसमें डॉ० अम्बेडकर के कुछ भाषण थे तथा ‘जाति भेद का उच्छेद’ नामक पुस्तक 12 सितम्बर 1970 को चौधरी चरण सिंह की सरकार द्वारा जब्त कर ली गयी। इसके लिए भी ललई सिंह ने श्री बनवारी लाल यादव एडवोकेट, के सहयोग से मुकदमें की पैरवी

को बताया और कहा कि आज भी उनकी लड़ाई जिदा है और मांग माने जाने तक संघर्ष जारी रहेगा।

शोषित साप्ताहिक के संपादक संजय श्याम ने देश की वर्तमान स्थिति को विस्तार से बताया और प्रतिरोध की संस्कृति को विकसित करने का आह्वान किया।

अमर शहीद जगदेव प्रसाद को भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित करने, डॉक्टर अंबेदकर के साहित्य को सभी शिक्षण संस्थानों में उपलब्ध कराने, पुनपुन परियोजना लागू करने, उत्तरी कोयल नहर को अविलंब चालू करने, लघु व कुटीर उद्योगों का विस्तार करने, सामाजिक व शैक्षिक आधार पर जनसंख्या के अनुपात में आरक्षण देने समेत चौदह सूत्री मांगों के समर्थन में पूनम देवी, प्रशांत कुशवाहा, भोला देहाती, चंचला कुमारी, सेनापति मेहता, शिशुपाल कुमार, कुलदीप मेहता, मथुरा प्रसाद अकेला, मिक्षुणि वंदना आदि ने धरना को संबोधित किया।

धरना को अपने जनवादी-क्रांतिकारी गीतों से श्वेता वर्मा तथा सौरभ कुमार बंटी ने जीवंत बनाये रखा। ■

जगदेव प्रसाद के प्रति आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल कर रहे हैं। शोषित पीड़ित, दलित-दमित, हाशिए पर रहने वाले कमरे, किसान-मजदूर समेत तमाम मेहनतकश जमात ऐसी ओछी मानसिकता वाले लोगों का मुहंतोड़ जवाब देने के लिए तैयार हैं।

हम बिहार सरकार से मांग करते हैं कि जाति-धर्म के नाम पर विभाजन पैदा करनेवाले ऐसे तत्वों को चिन्हित करके अविलंब कार्रवाई करे वरना नब्बे प्रतिशत जनता का ऐसा जन ज्वार उठेगा जो सरकार के नियंत्रण से बाहर हो आयेगा और दस प्रतिशत शोषकों का समूल नाश करके दम लेगा।

प्रेस कांफ्रेंस में दल के बिहार प्रदेश अंकेक्षक सह मीडिया प्रभारी सौरभ कुमार बंटी, औरंगाबाद जिला मंत्री, रौशन पासवान, औरंगाबाद जिला कोषाध्यक्ष धीरज कुमार, सुगन राम, शिवलम ठाकुर, रमेश चंद्रवंशी, ब्रजभूषण प्रसाद, गोपाल प्रसाद, अशोक कुमार की भूमिका सराहनीय रही। ■

की। मुकदमें की जीत से ही 14 मई 1971 को उ०प्र० सरकार की इन पुस्तकों की जब्ती की कार्यवाही निरस्त कराई गयी और तभी उपरोक्त पुस्तकें जनता को भी सुलभ हो सकी। इसी प्रकार ललई सिंह द्वारा लिखित पुस्तक ‘आर्यों का नैतिक पोल प्रकाश’ के विरुद्ध 1973 में मुकदमा चला दिया। यह मुकदमा उनके जीवन पर्यन्त चलता रहा।

ललई सिंह ने 1967 में बौद्ध धर्म अपनाया और यादव टाइल हटाया, यादव शब्द को हटाने के पीछे उनकी गहरी जातिवाद विरोधी चेतना हो रही थी। उन्होंने जातिविहीन समाज के लिए संघर्ष किया। पेरियार ई० वी० रामासामी के परिनिर्वाण के बाद दक्षिण में विशाल शोक सभा में ललई सिंह को विशेष आमंत्रण मिला, जहां लोगों ने इन्हें ललई सिंह को उत्तर भारत का पेरियार इन्हें कहा। ■

# शहीदे-आजम भगत सिंह के जन्म दिन के अवसर पर साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष तेज करें!

**क्रांतिकारी साथियों,**

28 सितम्बर को भगत सिंह के जन्मदिन की 119 वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है। उन्होंने साम्राज्यवादी अंग्रेजी शासन के खिलाफ हिन्दुस्तान समाजवादी रिपब्लिकन एसोसिएशन के बैनर तले अन्य क्रांतिकारियों के साथ मिलकर जुझारू संघर्ष किया। अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें सुखदेव एवं राजगुरु को 23 मार्च 1934 को फाँसी पर लटका दिया। इसलिए 23 मार्च को पूरे देश में भगत सिंह एवं उनके साथियों की याद में संकल्प सभाएं आयोजित की जाती हैं।

फाँसी के फंदे से लटकने के पहले उन्होंने दो महत्वपूर्ण नारे लोगों को दिए – ‘साम्राज्यवाद का नाश हो और इन्कलाब जिन्दाबाद’!

भगत सिंह एवं उनके साथियों की शहादत के कुल 95 साल हो चुके हैं, लेकिन आज भी साम्राज्यवादी ताकतें न केवल अस्तित्व में हैं, बल्कि दुनिया के विभिन्न देशों पर अपना सैनिक एवं व्यापारिक हमला जारी रखे हुए हैं। साम्राज्यवादी सरगना अमेरिका  इजरायल को उकसा कर और सैनिक मदद देकर फिलिस्तीन पर हमला करवा रहा है। इजरायली सैनिक हमलों में अबतक करीब 74,000 लोग मारे जा चुके हैं और 1 लाख 75 हजार से ज्यादा लोग जखमी हुए हैं। मृतकों एवं घायलों में करीब 70 प्रतिशत महिलायें एवं बच्चे शामिल हैं। युद्ध की विभीषिका से तबाह होकर करीब 60 लाख से 90 लाख फिलिस्तीनियों को अपना घर-बार छोड़कर पलायन करना पड़ा है। यूएनओ एवं विभिन्न मानवाधिकार संगठनों के अनुसार यह दुनिया की सबसे बड़ी शरणाथी आबादी है, जिनका बड़ा हिस्सा आस-पास के देशों में विस्थापित हो गया है। इजरायली हमलों में अस्पतालों, स्कूलों एवं शरणाथी शिविरों को भी निशाना बनाया गया है, जिसमें यूएनओ के 390 से अधिक कर्मचारी एवं 260 से अधिक पत्रकार और मीडियाकमी मारे जा चुके हैं। कमिटी टू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट्स के आंकड़ों के अनुसार पत्रकारों के इतिहास में यह सबसे घातक हमला साबित हुआ है। शर्मनाक बात यह है कि भारत सरकार के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिकी दिशा-निर्देश पर अक्टूबर 2023 से ही फिलिस्तीन की जनता पर चल रहे इजरायली हमलों की निंदा नहीं की है, बल्कि इजरायल जाकर  हत्यारे इजरायली प्रधानमंत्री नेतन्याहू की पीठ भी थपथपाई। एमनेस्टी इंटरनेशनल की एक रिपोर्ट के अनुसार (जुलाई 2026 में प्रकाशित) गाजा युद्ध शुरू होने के बाद से भारत सरकार ने इजरायल को कम से कम 2,596 हथियार एवं सैन्य साजो-सामान की खेपें भेजी हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने फरवरी 2026 में इजरायल यात्रा के दौरान इजरायली संसद को संबोधित करते हुए भारत-इजरायल के बीच रक्षा और आधुनिक तकनीकी सहयोग को मजबूत करने पर सहमति जताई।

जनवरी 2026 में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के आदेश पर अमेरिकी सैनिकों ने वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो एवं उनकी पत्नी सीलिया फ्लोरेस को बंदी बनाकर अमेरिका में कैद कर लिया है। अमेरिकी साम्राज्यवाद द्वारा की गई यह कार्रवाई तमाम अंतर्राष्ट्रीय नियमों का खुला उल्लंघन है। आश्चर्य है कि ऐसी शर्मनाक कार्रवाई की

यूएनओ एवं इसकी मानवाधिकार इकाई ने भी निन्दा नहीं की है। चीन ने मादुरो को तत्काल रिहा किए जाने की मांग करते हुए कहा कि अमेरिका ने अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन किया है, लेकिन भारत ने इस मामले में अमेरिका का बचाव करते हुए काफी सतर्कतापूर्ण प्रतिक्रिया दी है।

इसके बाद अमेरिका और इजरायल ने संयुक्त रूप से 28 फरवरी 2026 को ईरान पर हमला कर दिया। इस हमले में ईरान के सुप्रीम लीडर आयातुल्ला अली खामेनी और दर्जनों सैन्य अधिकारी मारे गए। तब से लेकर अभी तक ईरान पर साम्राज्यवादी हमले जारी हैं, जिसमें हजारों ईरानियों की मौत हो चुकी है। अमेरिका ने तेल व्यापार का एक महत्वपूर्ण जल मार्ग होर्मुज जलडमरूमध्य पर भी अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया है। अमेरिकी साम्राज्यवाद अपने वर्चस्व को कायम रखने के लिए 1945 से लेकर 2001 तक करीब 200 युद्धों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शामिल रहा है। आज दुनिया के 80 देशों में 780 सैन्य ठिकानों पर करीब 1.7 लाख अमेरिकी सैनिक तैनात हैं।

हाल में अमेरिकी सैन्य अधिकारियों ने क्यूबा पर हवाई हमले की तैयारी शुरू कर दी है। अमेरिका ने क्यूबा के करीब कैरेबियन सागर में अपने परमाणु ऊर्जा संचालित युद्ध पोत यूएसएस निमित्ज (USS Nimitz) और उसके पूरे स्ट्राइक ग्रुप को तैनात कर दिया है। इसके अलावा उसने अपने पी-8 पोसाइडन निगरानी विमान और तीन एम क्यू-4 सी ट्राइटन निगरानी ड्रोन भी सक्रिय कर दिये हैं। सीबीएस न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका की 160 वीं एयर बोर्न डिवीजन को हाई अलर्ट पर रखा गया है और पेंटागन में क्यूबा के समीप सैनिकों की तैनाती बढ़ा दी है। सैन्य विश्लेषकों का मानना है कि ट्रम्प प्रशासन वेनेजुएला की तर्ज पर क्यूबा में एक सीमित सैन्य हस्तक्षेप या सटीक हवाई हमले का ब्लू प्रिंट बना चुका है। चीन एवं रूस ने अमेरिका की सैन्य कार्रवाई (तैयारी) की कड़े शब्दों में निंदा की है। अगर अमेरिका क्यूबा पर हवाई हमले करता है और रूस एवं चीन क्यूबा की सैनिक मदद करते हैं तो पूरी दुनिया के समक्ष एक बड़े युद्ध का खतरा उत्पन्न हो जाएगा।

नरेन्द्र मोदी नीत भारत सरकार ने तो अमेरिकी साम्राज्यवाद के समक्ष आत्म-समर्पण कर दिया है। इसने न केवल उसकी विदेश नीति का समर्थन किया है, बल्कि अमेरिका के साथ एक व्यापारिक समझौता भी लगभग पूरा कर लिया है। सिर्फ इस व्यापारिक समझौते पर दोनों पक्ष के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर होने बाकी हैं। अगर यह समझौता कारगर रूप लेगा तो भारत के मक्का, सोयाबीन, कपास, गन्ना, दुग्ध, सेब, अखरोट, बादाम उत्पादन करने वाले किसानों और चॉकलेट उद्योग को काफी घाटा होगा। कर्ज जाल में फंसे भारतीय किसान पहले से ही लाखों की संख्या में आत्महत्या करने को मजबूर हुए हैं, इस समझौते के लागू होने के बाद उनकी खेती का घाटा बढ़ेगा और वे कर्ज जाल में फंसकर बड़ी संख्या में आत्महत्या करने को मजबूर होंगे। ज्ञात हो कि भारत ने अन्य बड़ी साम्राज्यवादी देशों के साथ फ्री ट्रेड समझौता भी किया है और भारी तादाद में विदेशी मालों का आयात करने का निर्णय लिया है। इससे भारत के उद्योग-धंधे भी बर्बाद होंगे

और मजदूरों की छंटनी होगी।

भगत सिंह ने फांसी पर लटकने के पहले दूसरा नारा लगाया था-  इन्कलाब-जिन्दाबाद!! इसका अर्थ होता है ‘क्रांति’, यानी व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई को सफल बनाओ। शहीद भगत सिंह और उनके साथियों के गुजरे हुए 95 साल हो गए हैं लेकिन हमारे देश में आज भी ‘क्रांति’ सफल नहीं हुई है। हमारे देश की क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी छोटे-बड़े करीब 100 ग्रुपों में बंटी हुई है। इनके नेतृत्व में देश के विभिन्न हिस्सों में व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन लाने की लड़ाई चल रही है।

**( पृष्ठ 4 का शेष )**

बल्कि नजदीकी रिश्तेदार भी थे । कम्युनिस्ट मंत्रियों का काम अत्यन्त हृदय विदारक रहा । जातीयता, भ्रष्टाचार में उनका मुकाबला किसी ने न किया । इन दोनों को कम्युनिस्ट पार्टी का नुमाइन्दा कहना गलत होगा । वास्तव में कम्युनिस्ट मन्त्रियों ने अपनी जातीय महासभा के नुमाईन्दों का पार्ट अदा किया । ये लगभग दस महीने तक मन्त्री रहे । इस अवधि में भ्रष्टाचारियों की पहली पंक्ति में इनकी शुमार हो गई । वे दोनों मधोलकर आयोग के मुजरिम हैं ।

**लेविन**—कम्युनिस्ट पार्टी के दोनों मन्त्री एक ही जाति के क्यों हो गये ?

**जगदेव**—मैं आपको पहले ही बताया कि कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व हिन्दुस्तान के पैमाने पर हिन्दुस्तानी कुलांक ( जर्मीदारों ) का है और बिहार के पैमान पर जो जाति शोषण के कला और विज्ञान में सबसे ज्यादा दक्ष हैं । उसी जाति का नेतृत्व है । वास्तव में बिहार में कम्युनिस्ट पार्टी एक सामन्ती जाति की प्रबंध समिति जैसी है । इसलिए मन्त्रियों का चुनाव भी जाति की बुनियाद पर किया गया, हालाँकि कम्युनिस्ट पार्टी में दलित, आदिवासी और मुसलमान का बहुमत था । इस सिलसिले में आपसे कहना चाहूँगा कि मद्रास के डी०एम०के० और बिहार के ‘शोषित दल’ को छोड़कर हिन्दुस्तान की जितनी पार्टियाँ है, सबों का नेतृत्व शोषक वर्ग के अमीरों के हाथ में है । इसलिए जिस पार्टी की भी हुकूमत बनती है उसमें बोलवाला ऊँची जाति का ही रह जाता है ।

**लेविन**—आप कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होने के बारे में सोच सकते हैं ?

**जगदेव**—नहीं, कम्युनिस्ट पार्टी या सामन्ती नेतृत्व मेरे जैसे सर्वहारा को निगल जाएगा । मेरा अस्तित्व खत्म कर देगा । शोषित समाज के जो लोग कम्युनिस्ट पार्टी में चले गए हैं, उनको आज या कल कम्युनिस्ट पार्टी से हटना ही पड़ेगा । मुझे कम्युनिस्ट पार्टी से नफरत है, उनके ऊँची जातीय पाखण्डपूर्ण नेतृत्व के कारण । इस नेतृत्व के रहते कोई

## भगत सिंह की जयंती मनाई गई

**पटना।** शोषित समाज दल केन्द्रीय कार्यालय पटना में 28 सितम्बर को शहीद-ए-आजम भगत सिंह की जयंती इन्कलाबी तेवर के साथ मनाई गयी। दर्जनों कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में दल के महामंत्री अखिलेश कुमार ने भगत सिंह के तैल चित्र पर माल्यार्पण करते हुए उनकी जीवनी, उनके संघर्ष, उनकी दूर-दृष्टि तथा उनके बलिदान पर प्रकाश डाला और कहा कि भगत सिंह के खून में क्रांतिकारिता बफि हुई थी। उन्हें क्रांतिकारी राजनीति विरासत में मिली थी। इनके पिताजी और इनके चाचा क्रांतिकारी

ऐसी स्थिति में देश की जनवादी-क्रांतिकारी ताकतों को भगत सिंह को याद करते हुए निम्न नारों को उठाना चाहिए :

- साम्राज्यवाद का नाश हो और अमेरिका द्वारा चलाये जा रहे या चलाये जाने वाली सभी सैन्य कार्रवाइयों पर रोक लगाओ;
- भारत सरकार अमेरिका द्वारा थोपे गए व्यापार समझौता को रद्द करो और भारत सरकार द्वारा किए गए सभी मुक्त व्यापार समझौतों को रद्द करो;
- जनता की आंशिक मांगों पर लड़ते हुए व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई तेज करें !

■

शोषित गलतफहमी में ही कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होगा । जो होशहवास में है, नहीं जा सकते । जहां तक दक्षिणपंथी कम्युनिस्ट पार्टी का सवाल है, वह चरित्र में कांग्रेस से भी गई बीती है । कांग्रेस ने जगजीवन राम जैसे चमार को भी अखिल भारतीय नेता बनने का मौका दिया और इन्हें केन्द्रीय मंत्री मण्डल में प्रमुख स्थान पर रखा है, लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी ने तो किसी दलित, आदिवासी या पिछड़ी जाति को राष्ट्रीय नेतृत्व में आने नहीं दिया ।

**लेविन**—शोषित दल का भविष्य क्या है ? जगदेव—भविष्य शोषित दल का ही है । आनेवाली सीधी लड़ाई 10% शोषक बनाम 90% शोषित के बीच होगी । 90% शोषितों की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्रांति का नेतृत्व शोषित दल करेगा । यह बात ठीक है कि हमारे दल को तोड़ने-फोड़ने की कोशिश ऊँची जातिवाले कई तरह से करेंगे लेकिन हम इतना जानते हैं कि चन्द वर्षों में शोषक वर्ग शोषितों की महान संगठित शक्ति के सामने आत्मसमर्पण कर देगा । हम किसी पर जुल्म करना नहीं चाहते हैं, लेकिन किसी का जुल्म बर्दाश्त करने के लिए तैयार भी नहीं हैं ।

**लेविन**—शोषित दल का कार्यक्रम क्या है ? **जगदेव**—शोषित दल सामाजिक क्रांति को मूल क्रांति समझता है । सामाजिक क्रांति के बिना राजनीतिक क्रांति असम्भव है । सामाजिक क्रांति का मतलब है—विशेष अवसर का सिद्धांत । इसके लिए जरूरी है कि राजसत्ता पर 90 प्रतिशत शोषितों का कब्जा हो । जो मन्त्रिमण्डल बने उसमें 90 प्रतिशत शोषित समाज के नुमाईन्दे रहे । शोषित दल का उद्देश्य सामाजिक और राजनीतिक समता पर आधारित नए समाज का निर्माण करना है । सरकारी और अर्द्ध सरकारी नौकरियों में कम से कम 85 प्रतिशत स्थान शोषित समाज के लिए सुरक्षित करने का कार्यक्रम है । आर्थिक कार्यक्रम समाजवाद के सिद्धांत पर आधारित है । इसलिए हमारा उद्देश्य सामाजिक और राजनीतिक समता पर आधारित नए समाज का निर्माण करना है । ■

विचारों से लैस थे और भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में इनकी अहम् भूमिका थी। जालियांवाला बाग काण्ड के समय भगत सिंह की उम्र लगभग 12 वर्ष की थी। इस हृदयविदारक घटना का भगत सिंह के बाल मन पर गहरा असर पड़ा और उन्होंने उसी वक्त स्वतंत्रता आंदोलन में कूदने का निर्णय ले लिया। उनका जीवन अनुकरणीय है।

मात्र 23 वर्ष की उम्र में जब उन्हें फाँसी के तख्ते पर चढ़ाया जा रहा था तो उन्होंने जोरदार नारा लगाया था— **साम्राज्यवाद-मुर्दाबाद! इन्कलाब-जिन्दाबाद!** ■

## पीड़ित परिवार के लिए न्याय की माँग

**दिनांक 16 सितंबर, 2026** को औरंगाबाद जिला के कुटुंबा प्रखंड के अंतर्गत ग्राम-दुधमी में बहन स्मिता के साथ हुए दुष्कर्म के खिलाफ शोषित समाज दल (औरंगाबाद) के कार्यकर्ताओं ने पीड़ित परिवार से मुलाकात किया।

पीड़ित परिवार के प्रति विश्वास जताते हुए। रौशन कुमार पासवान ने आरोपियों को सजा दिलवाने का भरोसा दिया और कहा कि अगर बहन स्मिता को न्याय नहीं मिलता है तो शोषित समाज दल के कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी शोसद के झंडा बैनर तले रोड

### (पृष्ठ 5 का शेष)

एकमात्र तथ्य यह है कि मैं ब्राह्मणवाद का धुर-विरोधी हूँ। मैंने कभी नहीं कहा कि ब्राह्मणों को खत्म किया जाना चाहिए।”

पेरियार ने गैर-द्विजों और महिलाओं से आह्वान किया कि वे “उस ईश्वर को नष्ट कर दें, जो तुम्हें शूद्र कहता है। उन पुराणों और महाकाव्यों को नष्ट कर दो, जो हिंदू ईश्वर को सशक्त बनाते हैं।”

पेरियार धर्म को प्रभुत्व और अन्याय का पोषक मानते हैं। वह सभी धर्मों को खारिज करते हुए विज्ञान और बुद्धिवाद का समर्थन करते। वह धर्माचार्यों और विज्ञान के समर्थक बुद्धिवादियों की तुलना करते हुए लिखते हैं, “धर्माचार्य सोचते हैं कि परंपरा-प्रदत्त ज्ञान ही एकमात्र ज्ञान है; उसमें कोई भी सुधार संभव नहीं है। अतीत को लेकर जो पूर्वाग्रह और धारणाएं प्रचलित हैं, वे उसमें किसी भी प्रकार के बदलाव के लिए तैयार नहीं होते।”

पेरियार ने गैर-द्विजों और महिलाओं से आह्वान किया कि वे “उस ईश्वर को नष्ट कर दें, जो तुम्हें शूद्र कहता है। उन पुराणों और महाकाव्यों को नष्ट कर दो, जो हिंदू ईश्वर को सशक्त बनाते हैं।” उनका मानना था कि “हिंदू-धर्म और जाति-व्यवस्था नौकर और मालिक का सिद्धांत स्थापित करते हैं।”

पेरियार ने ऐसा केवल कहा नहीं, बल्कि अपने अनुयायियों के साथ ऐसा किया भी। उन्होंने मनुस्मृति और रामायण को जलाया। रामायण की हकीकत को सामने लाने के लिए उन्होंने रामायण का एक मुकम्मल पाठ ‘रामायण पादीरंगल’ प्रस्तुत किया जो 1959 में अंग्रेजी भाषा में ‘द रामायण : अ टू रीडिंग’ शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इसका हिंदी अनुवाद 1968 में ‘सच्ची रामायण’ के नाम से ललई सिंह यादव ‘पेरियार’ ने प्रकाशित किया; जिसका अनुवाद राम आधार ने किया था।

पेरियार की नजर में रामायण कोई धार्मिक किताब नहीं है। यह एक राजनीतिक ग्रंथ है; जिसका उद्देश्य आर्यों का अनार्यों पर, ब्राह्मणों का गैर-ब्राह्मणों पर, पुरुषों का महिलाओं पर वर्चस्व और वर्चस्व के अन्य रूपों को न्यायसंगत ठहराना है। सच्ची रामायण की भूमिका में पेरियार लिखते हैं, “इनके मूल आख्यानों का सावधानी से विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाए, तो पता चलता है कि जो भी घटनाएं हुईं, वे असभ्य और बर्बर थीं” और इनकी कथाओं को इस तरह से लिखा गया है कि ब्राह्मण दूसरों की नजर में महान दिखें; महिलाओं को दबाया जा सके और उनको दासी बनाया जा सके। इनका

पर उतरेगें।

रामचंद्र मेहता (राष्ट्रीय संगठन मंत्री) ने प्रशासन के प्रति गंभीर आरोप लगाया और कहा कि आज की जो कानूनी प्रक्रिया है। वह प्रशासन की लापरवाही की वजह से न्याय के साथ खिलवाड़ हो गया।

बिहार प्रदेश अंकेक्षक सह मिडिया प्रभारी, सौरभ कुमार (बंटी) ने पीड़ित के प्रति विश्वास जताते हुए कहा कि हम सभी लोग आपके साथ हैं कभी भी किसी प्रकार की परेशानियां आए तो हम लोग से संपर्क करें। हम लोग आपके साथ हैं। ■

उद्देश्य उनकी रूढ़ियों और मनु की संहिता को समाज में लागू कराना है।”

पेरियार पितृसत्ता के मूल ढांचे को सीधी चुनौती देते हैं। पेरियार की क्रांतिकारी प्रगतिशील सोच सबसे ज्यादा उनके स्त्री संबंधी चिंतन में सामने आती है। पेरियार महिलाओं की ‘पवित्रता’ या स्त्रीत्व की दमनकारी अवधारणा के कटु-विरोधी थे। उनका कहना था कि “यह मान्यता कि केवल महिलाओं के लिए पवित्रता आवश्यक है, पुरुषों के लिए नहीं; इस विचार पर आधारित है कि महिलाएं पुरुषों की संपत्ति हैं। यह मान्यता वर्तमान में महिलाओं को निकृष्ट दर्जे का साबित करने की द्योतक है।” पेरियार महिलाओं के शिक्षा प्राप्त करने, काम करने, अपने ढंग से जीने और प्यार करने के अधिकार के जबरदस्त समर्थक थे।

इस मुद्दे पर उनके विचार इतने क्रांतिकारी थे कि द्रविड़ कड़गम के उनके कई घोर समर्थकों को भी वे रास नहीं आए और इसलिए पार्टी ने न तो उनका प्रचार किया और न ही उनके अनुरूप आचरण। जैसा कि स्त्रीवादी व पेरियार के विचारों की अध्येता वी० गीता ने हाल में 19वीं सदी की समाज-सुधारक सावित्रीबाई फुले की स्मृति में आयोजित एक परिचर्चा में भाग लेते हुए कहा- “पेरियार के क्रांतिकारी विचारों को दरकिनार कर उन्हें केवल आरक्षण, भौंडे नास्तिकवाद और कटु ब्राह्मण-विरोध के प्रतिपादक के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है और जाति, ऊंच-नीच, लिंग व सेक्स आदि से जुड़े प्रश्नों पर उनके विचारों को मानो किसी अलमारी में बंद करके भुला दिया गया है।”

श्रम और पूंजी के संघर्ष में पेरियार श्रमिक वर्ग के साथ खड़े होते हैं। वह साफ शब्दों में लिखते हैं कि “यह श्रमिक ही है, जो विश्व में सब कुछ बनाता है। लेकिन, यह श्रमिक ही चिंताओं, कठिनाइयों और दुःखों से गुजरता है।” पेरियार ने एक ऐसे समाज की कल्पना की जिसमें शोषण और अन्याय का नामो-निशान नहीं होगा। उस दुनिया का खाका खींचते हुए वह लिखते हैं, “एक समय ऐसा आएगा, जब धन-संपदा को सिक्कों में नहीं आंका जाएगा। न सरकार की जरूरत रहेगी, किसी भी मनुष्य को जीने के लिए कठोर परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। ऐसा कोई काम नहीं होगा, जिसे ओछा माना जाए या जिसके कारण व्यक्ति को हेय दृष्टि से देखा जाए।”

बर्बर माध्यकालीन मूल्यों और विचारों में जो रहे भारत को पेरियार के दर्शन, चिंतन और विचारों की सख्त जरूरत हैं। ■

## शोषित समाज दल की गया जिला कमेटी का गठन

**गया, 30 अगस्त 2026।** मास्टर एकेडमी, पंचदेव धाम, नियर सिताकुंड, मनोकामना हॉस्पिटल के बगल में मानपुर (गया) में संचालन सौरभ कुमार बंटी, बिहार प्रदेश अंकेक्षक सह मिडिया प्रभारी (शोसद) तथा मा० अखिलेश कुमार, राष्ट्रीय महामंत्री (शोसद) जी के अध्यक्षता में शोषित समाज दल की गया जिला कमेटी का गठन किया गया। कमेटी के गठन का उद्देश्य जिले में संगठन को मजबूत करना तथा शोषित, वंचित एवं सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के अधिकारों, सम्मान और सामाजिक न्याय की आवाज को मजबूती से उठाना है।

नवनिर्मित जिला कमेटी में शिशुपाल कुमार कुशवाहा जी को जिला अध्यक्ष, चंदन कुमार और संकल्प मौर्य जी को उपाध्यक्ष तथा विद्या भूषण कुमार सेनापति को सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गई है। वहीं मुन्ना यादव को उप सचिव एवं देवेन्द्र प्रताप जी को कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई है। पुरुषोत्तम कुमार को मीडिया प्रभारी बनाया गया है। और शिवशंकर कुमार, नीतिश कुमार और

रौशन कुमार को कार्यकारिणी सदस्य के रूप में चुना गया।

इस अवसर पर संगठन के पदाधिकारी मा० अखिलेश कुमार, राष्ट्रीय महामंत्री (शोसद) मा० रामानुज सिंह गौतम, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष (शोसद) रामचन्द्र मेहता, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री (शोसद) और मा० सुरजभान पासवान बिहार प्रदेश अध्यक्ष (शोसद) तथा अन्य कार्यकर्ताओं ने अपने वक्तव्य के माध्यम से कहा कि शोषित समाज दल का उद्देश्य समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को सम्मान, अधिकार और बराबरी दिलाने के लिए लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक तरीके से संघर्ष करना है। गया जिले में संगठन को पंचायत एवं प्रखंड स्तर तक मजबूत करते हुए जनसमस्याओं को प्रमुखता से उठाया जाएगा। नवनिर्गुत जिला कमेटी ने संकल्प लिया कि सामाजिक न्याय, समानता, शिक्षा, रोजगार, लोकतांत्रिक अधिकार और संविधान की रक्षा के मुद्दों पर लगातार जनजागरण अभियान चलाया जाएगा तथा शोषित समाज की आवाज को मजबूती से आगे बढ़ाया जाएगा। ■

## निर्दोषों पर किये गये मुकदमे को वापस लेने के लिए धरना

**कुर्था।** छतोई रोड जाम मामला में निर्दोषों पर से केस (FIR) वापस लिया जाए, बाढ़ में डूब कर मृत्यु होने वाले पीड़ित परिवार को आपदा अनुदान राशि जल्द मुहैया कराया जाए एवं बाढ़ से किसानों को नुकसान फसल माल जाल का उचित मुआवजा जल्द दिया जाए एवं सीमुआरा गांव के स्कूल जाने वाले पुलिया जो क्षतिग्रस्त है उसे अविलंब बनवाया जाए और ढोंढरा गांव के मुसन बिधा टोला के रास्ता निर्माण कराया जाए। उपरोक्त सभी मांगों के लिए शोषित समाज दल की ओर से अमरजीत कुशवाहा राज्य समिति सदस्य शोसद की अध्यक्षता में कुर्था ब्लॉक में एक दिवसीय धरना दिया गया। धरना में कुशवाहा ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि अगर छतोई रोड जाम मामला में निर्दोष व्यक्तियों पर से केस वापस नहीं लिया जाता है तो इससे बड़ा धरना आयोजित किया जायेगा। धरना में शामिल पंचम सम्राट ने कहा कि छतोई गांव निवासी शिवम कुमार की सेनाने नहर में नहाने के दौरान डूबकर मौत हो गयी थी। परिजनों के द्वारा शासन-प्रशासन को ससमय सुचना देने के उपरांत भी सही समय पर गोताखोर /SDRF की टीम नहीं आ पायी। इसके उपरांत ग्रामीण शांतिपूर्ण सड़क पर

उतर गये। उसी दौरान प्रखंड विकास पदाधिकारी से कुछ कहा सुनी हुई इसी को लेकर ग्रामीणों पर FIR दर्ज कर दिया गया अपनी नाकामी को छुपाने के लिए। सम्राट ने चेतावनी देते हुए सरकार से मांग कि है कि इसको उच्च स्तरीय जांच करके निर्दोष लोगों पर से केस वापस लिया जाए एवं शासन-प्रशासन पर विभागीय कार्रवाई किया जाए साथ ही बाढ़ में डूबकर मरने वाले पीड़ित परिवार को आपदा अनुदान राशि अविलंब मुहैया कराया जाए, बाढ़ से किसानों का नुकसान फसल का भी राशि का मुआवजा जल्द मुहाया कराया जाए जिससे किसान अपना जीवन यापन कर सके। इस धरना में अखिलेश कुमार राष्ट्रीय महामंत्री शोसद ने अपनी बातों को रखते हुए सरकार को चेतावनी दिया कि अगर छतोई रोड जाम मामले में निर्दोष लोगों पर से केस वापस नहीं लिया गया एवं डूबे व्यक्तियों के पीड़ित परिवार को चार लाख तुरंत राशि नहीं दिया गया तो फिर आंदोलन तेज होगा। धरना में उपस्थित सौरभ कुमार बंटी, महेश सिंह, प्रशांत कुमार, भोला प्रसाद देहाती, शंभू पासवान, धर्मेन्द्र यादव, ओमप्रकाश, विजय कुमार, धीरज कुमार और तमाम सैकड़ों क्रांतिकारी साथियों ने अपनी बातों को रखा। ■

**शोषित समाज दल उत्तर प्रदेश समिति ने पदाधिकारियों की सूची जारी की है तथा चुनाव के लिए संभावित प्रत्याशियों की सूची जारी की है, जो इस प्रकार है—**

### प्रदेश कार्यकारिणी उत्तर प्रदेश

प्रदेश अध्यक्ष-आर०के०पटेल  
मो०-7379303492  
उपाध्यक्ष-मा० सोमई प्रसाद जी  
मो०-9450572280  
महामंत्री-मा० मोतीराम वर्मा जी  
मो०-8419874959  
जिला संयोजक सिद्धार्थनगर-अनवारुलहक जी  
मो०-8604617360  
जिला संयोजक बस्ती-  
मा० सिद्धनाथ प्रजापति जी  
मो०-9451146352

### चुनाव की तैयारी करने वाले प्रत्याशी

- आर०के०पटेल, विधानसभा क्षेत्र-276 गोसाईगंज अयोध्या
- मा० अनवारुलहक जी, विधानसभा-शोहरत गढ़, सिद्धार्थनगर
- मा० सोमई प्रसाद जी, विधानसभा- डुमरियागंज, सिद्धार्थनगर
- मा० विनोद कुमार चौधरी जी विधानसभा-रुधौली, बस्ती
- मा० रामज्ञान वर्मा जी, विधानसभा-हरैया, बस्ती